OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:21 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

21st ANNIVERSARY OM SHANTI MEDIA

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -21 अंक - 9 अगस्त-I-2019 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

25 अगस्त, विश्व बंधुत्व दिवस पर विशेष...

परमात्मा की प्रकाश किरण दादी प्रकाशमणि

सफल नेतृत्व के साथ-साथ सबको हर पल-हर क्षण प्रेरणा दे, मानवता में एक नई जान फूंकने वाले चमत्कारी व्यक्तित्व की धनी, परमात्मा के कार्य को उन्हीं के समान करने के निमित्त हमारी दादी प्रकाशमणि जी थीं। जिन्होंने ना कभी किसी को कुछ कहा और ना ही कुछ करने के लिए विवश किया, उन्होंने सिर्फ कर्म किया और उनके कर्म ही सबके लिए प्रेरणा स्रोत बन गये। परमात्मा के नाम को प्रकाशित करने वाली, प्रकाश स्वरूप में प्रखर हो, जहान में ईश्वरीय परचम लहराया। ऐसे विरले व्यक्तित्व को हम सभी का सहृदय सम्मान व शत्-शत् नमन।

जिस समाज में नारी को सबने अपने तबके से अलग किया हुआ था, उनको देखने का एक दारिद्रय भाव, ऐसे में एक प्रकाश इस धरती पर आया और इस सृष्टि के प्रथम मानव को अपना आधार बनाया, जिससे नारी समाज को एक नया आयाम मिला। और नाम देता ब्रह्माकुमारियां। हरेक ब्रह्माकुमारी अलग-अलग विशेषताओं से ओत-प्रोत है। एक प्रज्ञ स्थिति वाली नारी ने परमात्मा के कार्य को चहुं ओर पहुंचाने का अलग तरह का कार्य किया। ब्रह्माकुमारीज़, समाज के हरेक मानव को जीवन जीने की एक शैली सिखाता है। इसकी प्रबल इच्छा लिये हमारी दादी प्रकाशमणि जी आगे बढ़ीं, समाज में उन वर्गों तक पहुंचीं, जहाँ एक आम व्यक्ति के लिए पहुंचना मुश्किल है। और सबको अपने स्नेह के पाश में बांधा।

दुनिया चाहे कुछ भी समझे, ये कोई आम घटना नहीं है या आम व्यक्तित्व नहीं है। ये एक वास्वविक कहानी है एक ऐसी आध्यात्मिक शक्तिशाली नारी की, जिन्होंने वो कर दिखाया जिसे आम जनमानस सोच भी नहीं सकता। दुनिया उन्हीं के पद चिन्हों पर चलती है, जिन्हें किसी में कुछ नया दिखता है या नये तरह का दिखता है। ऐसे एक चमत्कारिक व्यक्तित्व की धनी थीं हमारी दादी प्रकाशमणि जी। जिन्हें हर कोई चाहता, उनके गुणों को अपने में समाना चाहता, उनके समान बनना चाहता, उनका उदाहरण दूसरों को दे-दे कर सबको उनके समान बनाना चाहता। ऐसा व्यक्तित्व आज तक ना हमने कभी इन आँखों से देखा है और ना ही इन कानों से कभी सुना है। इतिहास में किये गये सामाजिक कार्य के बहुत सारे नाम दर्ज़ हैं लेकिन हमने उनको देखा नहीं है सिर्फ सुना है, लेकिन ये तो हमारी आँखों देखी घटना है। इसमें सबकुछ सटीक है, सही है, नया है। हो सकता है कि कहीं पर हम गलत भी हों, लेकिन जो हम कह रहे हैं वो सभी कहते भी हैं। हरेक ब्रह्माकुमार-कुमारी व अन्य समाज के लोग भी, दादी जी से एक बार जो मिल लेते थे वे उनकी महिमा करते नहीं थकते और पुनः पुनः उनसे मिलने की इच्छा व्यक्त करते। और उन्हें दादी द्वारा कोई बात कही जाती तो वे उन्हें सहजता से करने लग जाते। मानने वाली बात ये है कि ये दृष्टांत आने वाले समय में बहुतों को प्रेरणा देगा। इसमें सिर्फ दादी, उनके गुण, उनकी विशेषताएं और उनका सबकुछ समाया हुआ है। और हम ऐसी दादी के स्मृति दिवस पर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देते हैं।

पाँचों महाद्वीपों में दादी के चरित्र की छाप और उस चरित्र की गाथा गाने वाले आज पूरे विश्व में कहीं न कहीं किसी न किसी स्थान पर सेवा कर रहे हैं। दादी जी के कर्त्तव्य आज हम आत्माओं के द्वारा जीवित व चित्रित हैं। ऐसी विदुषि सशक्त नारी, सम्पूर्ण मानव समाज को दिल खोलकर उस दिलाराम परमात्मा की याद दिलाने वाली करिश्माई व्यक्तिव की धनी आज भी इत्र की भांति सबके ज़हन में महक रही है। ऐसे पवित्र इत्र को हम कुछ शब्दों में, कुछ वाक्यों में, कुछ लाइनों में न चित्रित कर सकते हैं और ना चरितार्थ कर सकते हैं। बस कुछ प्रेरणाओं को जो हमारी दादी से हम सबको मिली, वो आपके सामने रख सकते हैं। तो ये विशेष अंक आप सभी पाठकों को इस लिए भी समर्पित है ताकि आप ऐसे व्यक्तिव को जानें और कैसे उन्होंने परमात्मा को प्रत्यक्ष किया, उसका चिंतन भी करें और उस चिंतन से कुछ अपने व्यक्तित्व को निखारने की हिम्मत जुटायें।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:21 PM Page 2

'जो ओटे सो अर्जुन' ये दादी ने चरितार्थ किया

- ब्र. कु. गंगाधर

हमने हर पल उसे निहारा, देखा कि कैसे उस महान आत्मा ने अपना जीवन जिया। मुझे भी सेवा हेतु उनका सानिध्य प्राप्त हुआ। जब इस ईश्वरीय यज्ञ का सबसे पहले और विशाल प्रोजेक्ट ज्ञानसरोवर का निर्माण करना तय हुआ तब दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे कहा कि आपको इस कार्य को देखना है। मैंने बिना कुछ सोच-विचार किये दादी जी की बात को स्वीकार कर लिया। जबकि मुझे कंस्ट्रक्शन के सम्बंध में कुछ भी ज्ञान नहीं था।

हमने देखा, उस समय इतने विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण करना, तो सबकुछ चाहिए। लेकिन दादी ने बाबा के निर्देशानुसार सेवाओं के विस्तार को देखते हुए तय किया कि करना ही है।

दादी जी ने सभा में उद्घोषणा की कि बाबा के दो लाख बच्चे हैं। हर दिन एक रुपया इस प्रोजेक्ट को सफल करने के लिए निर्माण की भंडारी में डालें। दादी जी का बोलना और हम सबका करना। बस, इसी से ही इतना विशाल ज्ञानसरोवर प्रोजेक्ट सहजता से पूर्ण हो गया। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि दादी जी का निश्चय और विश्वास उनके कर्म में दिखाई पड़ता था।

दादी जी ज्ञान का मर्म बड़ी सरलता और सहजता से बताती थीं। ज्ञान का अर्थ ही है पुराने संस्कारों को बदलना। जो हमारे में तमोप्रधानता है, उसको परखना और उसे सतोप्रधान बनाना। हमने देखा, दादी जी बाबा के महावाक्य को तीन तीन बार अध्ययन कर उसके गुह्य मर्म समझकर अपने जीवन में उतारती थीं। मुझे याद है कि जब किसी ने कहा कि दादी, फलाने की ये आदत मुझे पसंद नहीं है, तो दादी जी ने कहा कि वो बात तो ठीक है, लेकिन उसकी आदत ठीक न हो और उसकी आदत के अनुरूप हमारी भावनायें बदल जाती हैं तो हम भी ज्ञानी नहीं ठहरे ना! यानि कि उनकी आदत का प्रभाव हमारे पर अगर पड़ता है तो हम उसको कैसे सुधार सकेंगे! हमें तो यह चेक करना है कि मेरे जीवन में भी ये आदतें तो नहीं हैं, उसे चेक कर उसे बदलना है। किसी को बदलने में मेरे संस्कार रुकावट तो पैदा नहीं करते हैं! इसी के लिए तो हमें ज्ञान की शक्ति चाहिए।

हमने दादी जी को हमेशा बाप समान बनकर कर्म करते हुए देखा। दादी जी के जीवन से हमने एक उत्तम ब्राह्मण की छवि देखी। वे हमेशा कहतीं कि हम बाह्मणों का आचरण ही है सबका सुनना, सबका समाना, सबका सहन करना और सबको स्नेह देना। सबको सहन कराना, ये हमारा आचरण नहीं है। सहन करना सीखो, सहन कराना नहीं। दादी के जीवन के इस मंत्र को हमने प्रत्यक्ष रूप में देखा। एक बार की बात है, दादी जी को सभी मिलते थे। एक भाई दादी के पास आकर बहुत ज़ोर ज़ोर से बोलकर अपनी बात कहकर बाहर चला गया। उसके बाद मुझे दादी से मिलना था। जैसे ही मैं दादी जी के कक्ष में मिलने गया, दादी जी एकदम शांत और सौम्यता के साथ बैठी थीं। कारोबार की मैंने बात की। दादी ने बड़े प्यार से मेरी बात को सुना, समझा और समाधान दिया। मैं वापस चला गया। पर मेरे मन में वो बात सारे दिन चलती रही कि वो पहले वाला भाई जो झगड़ा करके या ऊँची आवाज़ में दादी के सामने बोलकर गया। लेकिन दूसरे दिन भी जब मैं दादी के पास कारोबार अर्थ गया तो दादी वैसी ही शांत और सौम्यता की मुद्रा में थीं। मुझे मन ही मन ये उत्तर मिल गया कि महान व्यक्ति के लक्षण क्या होते हैं। दादी जी किसी की कैसी भी बात अपने दिल पर नहीं रखती थीं। दादी जी हमेशा कहती थीं कि या तो बातें अपनी दिल में रख सकती हूँ या बाबा को, क्योंकि दिल तो एक ही है ना! ये हमने दादी के जीवन से हर पल अनुभव किया।

दूसरों के कल्याण के साथ साथ स्व-उन्नति का ख्याल उनके जीवन से झलकता था। जो बाबा ने कहा, वही मुझे करना है, ये दादी के जीवन का लक्ष्य रहा। दादी हमेशा कहती थीं कि कर्मातीत स्थिति का अनुभव अंत में थोड़े ही कर सकेंगे। अंत में तो उड़ जायेंगे। क्या उड़ने के बाद उस अनुभव का वर्णन करेंगे! कर्मातीत अवस्था का आनंद अगर शरीर छोड़ने समय अनुभव में आयेगा तो उसका वर्णन कब और कैसे करेंगे! कोई पूछे, इस स्थिति का अनुभव क्या है? तो क्या हम उसको ये कहें कि जब शरीर छोड़ूं तब कहना। मैं सदा उसी तख्त पर रहूँ जैसे आज भी कर्मातीत हूँ, कल नहीं होऊंगी। उड़ने के बाद तो मैं सुनाउंगी ही नहीं कि मैं कितनी ऊँची स्थिति में हूँ। इससे अच्छा तो मैं वो फल अभी खाऊँ। इसके लिए मैं आत्मा इतनी सम्पन्न रहूँ जो सर्व सम्बंधों, सर्व गुणों, सर्व कलाओं का फल रोज़ खाऊँ। हमें तो इस स्थिति में बहुत मज़ा आता है। महान व्यक्ति अपने भीतरी परिवर्तन को हमेशा प्रथम रखता है और अपने जीवन से दूसरों को प्रशिक्षित करता है, ये हमने दादी में देखा। 'जो ओटे सो अर्जुन' ये हमने दादी के जीवन में देखा और पाया। उनकी पुण्य तिथि पर हम भी ऐसा बनकर दिखायें, यही उनके प्रति हमारा श्रद्धासुमन होगा।

दादी जी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया

दादी जी बाबा के निर्देशों को बड़ी तत्परता से अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

दादी प्रकाशमणि को मैं बचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता सम्पन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुंज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। बारी-बारी से सबकी भोजन बनाने की सेवा आती थी तो अपनी बारी में वे भोजन भी बहुत अच्छा बनाती थी। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बताए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं। वे सरलता और स्नेह की मूरत बन मम्मा-बाबा तथा सर्व भाई-बहनों पर अपनापन उड़ेलती रहीं।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प, बोल में नहीं देखा।

सेवा के क्षेत्र में भी उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया। प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मज़बूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं।

बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का प्रमुख केन्द्र था ही। उन दिनों पूरे चार साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियाँ हमारे पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आई। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नैचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी।

साकार बाबा का प्रतिरूप बन दादी ने सबको दिया भरपूर प्रेम

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा हर बच्चे को बहुत प्यार करते थे। गलती करने वाला भी बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना अहसास हो जाता था कि वह भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। मुरली क्लास के अलावा बाबा किसी की भी किसी गलती के बारे में कुछ नहीं बोलते थे। उसी प्रकार दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं।

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूंद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूंदें पड़ रहीं हैं, एक-एक बूंद ज्ञान मोती का रूप धारण करती जा रही है। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा भी इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे, मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चेम्बर नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट से जाते थे और हम सभी बच्चे पास पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चेम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दे, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना अहसास हो जाता था कि वह भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थी कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:21 PM Page 3

दादी जी की अनमोल शिक्षायें हमारे प्रति...

जब तक प्राण है... तब तक प्रण है - दादी प्रकाशमणि

हमें संसार में सबसे बड़ी लॉटरी मिली है, वो अवसर हमारे पास आया है जो हमें मन-इच्छित फल देने वाला है। हम तो बिछुड़ गये थे, कहीं अंधकार में भटक रहे थे, पर हमें तो घर बैठे वो मिला जो संकल्प में भी, सोच में भी नहीं था। कहते हैं, दिन का खोया रात को वापस आ जाये तो उसको खोया हुआ नहीं कहेंगे। यह कहावत हमारी ही है ना! हम परमात्म बाप को भूले तो आधा कल्प खो गये। खो भी वहाँ गये जहाँ माया ने अपनी गोद में बिठा लिया। और सिर्फ गोदी में ही नहीं, हमें गले तक पकड़ कर रखा है। जैसे कहते हैं सोने में खाद पड़ती, वैसे ही मुझ सोने में तमोप्रधानता की खाद पड़ गई थी। बाबा(परमात्मा) ने आकर के हमें फिर से ज्ञान-योग की भट्ठी में डाला है और खाद निकाल सच्चा सोना बनाया है। हम तो माया के पास खो गये थे, बाबा ने अब इस संगम पर हम खोये हुए बच्चों को फिर से गोदी में बिठाया है और वापस अपने घर ले चल रहा है। इसलिए बाबा हमें रोज़ मीठे-मीठे सकीलधे बच्चे कहकर सम्बोधित करता है। हम तो बाबा के बहुत प्यारे बच्चे हैं, जिन्हें स्वयं बाप ने पाला है। वैसे भी कोई गुणवान आत्मा होती है तो सभी को प्यारी होती है। उसके लिए कहते हैं इसे तो स्वयं भगवान ने फ़ुर्सत से बैठकर बनाया है। गुणों की सुंदरता को देख कहते हैं कि इसे तो भगवान ने खास बनाया है। बनाया सबको है, लेकिन अगर गुणों को देखते हैं तो कहेंगे कि भगवान ने खास बनाया है। हम खास हैं, तभी तो भगवान ने भी खास बनाया है। कैसे बनाया? हमारा भाग्य विधाता हमारे भाग्य के तकदीर की लकीर खींच रहा है। इसलिए हमें अपने भाग्य का गुणगान करना है। भाग्य विधाता की महिमा निरंतर करनी है। स्वयं भगवान ने स्पेशल हमारे ललाट पर भाग्य की लकीरें खींची हैं। तब तो हम कहते हैं कि स्वयं भाग्य विधाता हमारे तकदीर की लकीर खींच रहा है। इसलिए हमें अपने भाग्य का गुणगान करना है। भाग्य विधाता की महिमा गानी है। भाग्य विधाता ने घृत डाल हमारा दीया जगाया है। इसलिए सब कोई पूछते, क्या तुम्हें निश्चय है कि तुम्हें भगवान पढ़ाते हैं? तो हम कहते कि क्या इसमें भी कोई संशय की बात है! अगर कोई पूछते हैं, तो माना संशय है। उनकी तकदीर की लकीरें अभी तक खींची हुई नहीं हैं।

मांगकर दूध को... पानी न बनायें

हम तकदीर जगाकर आये हैं। जगाने की मेहनत नहीं करते। हमारी तकदीर जगी हुई है। हम विश्व की सेवा पर उपस्थित हैं। एक तरफ भक्त कहेंगे, हे भगवान! मेरी तकदीर अच्छी करना। हम कहते हैं, अच्छी से अच्छी, महान से महान, सृष्टि को रोशन करने वाली तकदीर बाबा ने हमारी जगा दी है। ब्राह्मण अगर कहे कि बाबा हमारी तकदीर जगा कर रखना, तो उसको क्या कहेंगे? ये संशय है ना! बाबा हमें मदद करते रहना, क्या बाबा हमें मदद देता नहीं जो मैं मांगती हूँ! कहावत भी है, सहज मिले सो दूध बराबर..., बाबा ने हमारी दूध बराबर तकदीर बनाई है। हम मांगकर उस दूध को पानी क्यों बनाते हैं! दृढ़ निश्चय वाले कभी भी कुछ मांग नहीं सकते। वह तो ओहो बाबा... वाह बाबा... के गीत गायेंगे।

इतनी दूरी न बना लें...

बाबा कहते, मैं रोज़ बच्चों के नाज़ों का खेल देखता हूँ, क्योंकि बच्चे अभी तक बहुत नाज़-नखरे करते हैं। स्वयं को नीचे बिठाते और बाबा को बहुत ऊँचाई पर देखते हैं, तभी दूरी का अनुभव होता है। मैं तो बाबा को अपने साथ बिठाती, मैं बाबा के समान बनकर साथ में बैठ जाती। ऐसे नहीं, बाबा आप तो अर्श पर हैं, मैं तो फर्श पर हूँ। यह इतनी दूरी भी क्यों! दूर रहेंगे तो धरनी की धूल आकर्षित करेगी। जब बाबा ने हमें पवन पुत्र बनाकर उड़ना सिखाया, फिर हम धूल में क्यों खेलते! इतनी दूरी क्यों! समान बनकर बाबा के साथ क्यों नहीं बैठ जाते!

यहाँ हमें मांगने के बजाए महान बनने की शिक्षा मिली। कमज़ोर बनने के बजाय कमाल करने की बात समझ में आई। हम कहीं खो गए थे, अपने आप से और परमात्मा से बिछुड़ गये थे, पर सुबह का खोया, रात को घर आ जाये, उसको खोया नहीं कहते। ये बात हमें परमात्मा ने बहुत ही अच्छी तरह से समझाई और हमने समझी भी। बस इसी की कमाल से जीवन धन्य बन गया। न सिर्फ धन्य, बल्कि दूसरों को भी महान बनाने के काबिल हो गये। यही तो कमाल है हमारे प्राण प्यारे बाबा की। हम न सिर्फ धरती के सितारे बने, बल्कि दूसरों के सहारे भी बने।

हम कौन हैं, इस स्वमान में रहें

हम हैं बाबा की सच्ची-सच्ची परियाँ। हमारी बुद्धि धरनी पर क्यों! हम तो धरनी के सितारे हैं। हम जग को रोशन करने वाले हैं। ऐसे रोज़ अमृतवेले अपनी मस्ती की छाप लगाओ। फिर कभी नहीं कहना पड़ेगा कि बाबा हमारी तकदीर जगा दो। बाबा ने हमें चोटी से पकड़कर निकाला और अपने साथ गद्दी पर बिठाया है। हम कोटों में कोऊ, सेलेक्टेड डायमण्ड हैं। फिर हम डायमण्ड कहें, अभी मेरे में दाग लगा हुआ है, तो अपनी वैल्यू को हम खुद ही कम क्यों करते! बाबा ने हमें सेलेक्ट कर लिया ना! हम बाबा के पास पहुँच गये। दुनिया देख-देख चिढ़ती रहे, हम तो बाबा के बन गये, बाबा हमारा बन गया।

हम कमज़ोर नहीं, कमाल करने वाले

तो हे बाबा के अनन्य सिकीलधे बच्चे! तुम ऐसे भी नहीं कहो, क्या करूँ माया आ जाती है। वह आती नहीं, तुम्हें छूती भी नहीं। आप छुट्टी देते हो तो नज़दीक आ जाती है। कहते हैं, मंसा में आकर्षण होती है, लेकिन माया खाती तो नहीं है। उनको खाने नहीं देना, बस इतना करना, आये..., आकर चली जाये। आप उनका स्वागत नहीं करना। उनकी पालना नहीं करना। माया आये, माया खाये नहीं, उसकी सम्भाल रखना। गेट पर चौकीदार होशियार रखना जो वो अंदर आकर नुकसान न करे। गेट के अंदर आने ही नहीं देना। बाहर से आये, नमस्कार करके चली जाये। हमारा उसमें क्या जाता है! ऐसे नहीं कहो, माया आती है। वह आती नहीं है, पेपर लेती है आप सभी की कमियों का, बुराइयों का। बुराइयों को दूर करने के लिए ही बाबा ने इसका नाम रखा है राजस्व अश्वमेध अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ। किसी के ऊपर कोई ग्रह हो तो उसे इस यज्ञ में स्वाहा कर देना। क्रोध का, काम का, जो भी ग्रह हो, तो शिव बाबा के मंत्र से, उसे प्यार के बल से निकाल कर स्वाहा कर देना। फिर माया मासी कभी नहीं आयेगी।

पावन बनकर पावन दुनिया बनायेंगे

जब तक तन में प्राण है, तब तक मेरा प्रण है, 'एक बाबा दूसरा न कोई'। हमारा प्रण है हम आपके सपूत बच्चे बनकर आपका नाम बाला करेंगे। हम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया बनायेंगे। हम नई दुनिया स्वर्ग के लायक बनकर सृष्टि पर स्वर्ग ज़रूर लायेंगे। ये सब हमारे प्रण हैं। प्रण यानी प्रतिज्ञा। जब तक प्राण है, तब तक यह प्रतिज्ञा पक्की है। जबसे बीके बने, तब से यह प्रण अथवा वायदा किया है ना! यही वायदा पक्का निभाते रहना। ब्रह्माकुमार माना शिव बाबा हमारा आपसे वायदा है कि मरेंगे, जियेंगे, प्राण तजेंगे, लेकिन प्रण कभी नहीं छोड़ेंगे। हम देवता बनेंगे, एक धर्म-एक राज्य लायेंगे, पावन बनकर पावन दुनिया बनायेंगे।

यूनाइटेड किंगडम। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रिटिश पार्लियामेंट में सिद्धाश्रम शक्तिपीठ, यू.के., कर्मा फाउण्डेशन तथा संस्कार टी.वी. द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्व प्रसिद्ध जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा राजयोगिनी ब्र.कु. शिवानी को 'हैप्पीनेस एम्बेसडर अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए राजराजेश्वर गुरूजी तथा रमेश अरोड़ा। साथ में दिखाई दे रहे हैं ब्र.कु. जयंती तथा ब्र.कु. जेमिनी।

मुम्बई-बोरीवली वेस्ट। विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करने के पश्चात् पौधे को पानी देते हुए सांसद गोपाल शेट्टी तथा ब्र.कु. बिन्दू।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:21 PM Page 4

कैसे करें...

रक्षाबन्धन की रक्षा

रक्षाबंधन, रक्षा और बंधन, दो शब्दों से बना हुआ है। भारत में विशेष तौर पर रक्षाबंधन चारो ओर बड़े प्यार से मनाते हैं। आज हम देख रहे हैं कि रक्षाबंधन सिर्फ देश तक ही सीमित नहीं है। विदेशों में भी इसको धूमधाम से मनाते हैं, जबकि वहाँ का कल्चर और उनकी मान्यतायें अलग हैं। तो रक्षा सिर्फ भाई और बहन के बीच का सम्बंध नहीं है कि बहन भाई को रक्षासूत्र बांधे और भाई उनकी रक्षा करे। पर रक्षाबंधन का व्यापक और सूक्ष्म सम्बंध पवित्रता के साथ है। पवित्रता तन की, मन की, संकल्पों की, व्यवहार की, वाणी की हो तो व्यक्ति कुछ हद तक इस बंधन के साथ बंधा हुआ है और सुरक्षित है।

बहनें भाइयों को बंधन क्यों बांधती हैं?

दुनिया में एक कहावत है कि जब कोई विपत्ति आती है तो रक्षार्थ हम किसी को बुलाते हैं। अब ये रक्षाबंधन का पर्व ज़्यादातर इस कहावत के साथ जुड़ता है कि बहन भाई को अगर राखी बांधती है तो वो समय आने पर उसकी रक्षा करेगा। लेकिन यहां असमंजस की स्थिति ये है कि यहाँ बहन बड़ी और भाई छोटा भी हो सकता है। अब आप बताओ कि छोटा भाई बड़ी बहन के ऊपर आई विपत्ति से उसकी रक्षा कैसे कर सकता है! है ना सोचने का विषय! तो इसका पूरा सम्बंध आध्यात्मिकता से ही है कि परमपिता परमात्मा के पवित्रता के सम्बंध को एक रिश्ते के साथ जोड़ा जाता है, वो है भाई और बहन का रिश्ता, जो रक्तसम्बंधी हैं, और एक माता-पिता के संतान हैं। इसलिए ये रिश्ता अति पवित्र है क्योंकि इसमें दृष्टि-वृत्ति एक जैसी होती है। लेकिन आज की दयनीय स्थिति क्या कहीं ये बयां करती है? आज इतनी विकृति है इस दुनिया में कि किसी की भी वृत्ति किसी के लिए भी खराब हो जाती है। ऐसे में कौन किसपर विश्वास करे, कौन किसकी रक्षा करे! सब भक्षक हो गये, कोई रक्षक नहीं रहा। आज कोई बहन अपने घर में भी सुरक्षित नहीं है, तब भला हमें सुरक्षा कौन दे? तो ऐसे में एक परमपिता ही है जो परम रक्षक है, परम पवित्र है और वो हमारी रक्षा भी पवित्रता का कंगन बांध के करता है। अर्थात् जब हम पवित्र सोच के साथ, पवित्र दृष्टि-वृत्ति के साथ आगे बढ़ते हैं तो स्वयं ही हम अपनी रक्षा कर लेते हैं। ये है इस त्योहार का परमात्मा के साथ गहरा सम्बंध। इसलिए एकमात्र सहारा है परमात्मा, जो हर विपत्तियों से, बुराइयों से, विकारों से, पवित्रता के आधार से हमारी रक्षा करता और करवा सकता है।

चलो, हम इस त्योहार को पाँच संकल्पों के साथ मनायें...

1. दृष्टि-बंधन : रक्षाबंधन में सबसे पहला काम कि हमें अपनी दृष्टि को श्रेष्ठ बनाना है। सिर्फ और सिर्फ एक दूसरे को हम अच्छी दृष्टि से मतलब आत्मिक भाव से देखेंगे और कुछ भी ऐसी जो हमारी पुरानी मान्यतायें हैं देह की कि ये स्त्री है या ये पुरुष है, इससे ऊपर उठेंगे। हमारा एक तरह से ये एक दृढ़ संकल्प है जिसे हमें कुछ दिनों तक करना है ताकि ये पक्का हो जाये।

2. वाणी : दुनिया में लोग कहते हैं कि हमारा मन नहीं था, हमारा भाव नहीं था, हमने ऐसे ही बोल दिया। कुछ भी बोल दिया, ये बोलना है। लेकिन क्या बोलना है और कब बोलना है, ये तप है। और ये तप तब आता है जब वाणी पर लगाम लगायेंगे। कैसा लगाम? वाणी भी एक कर्म है। जैसे आपने कुछ बोला, अब वो कर्म के रूप में सामने वाले के सामने आ गया। किसी से हमने उल्टी-पुल्टी बात की, अब वो एक बात मुँह से निकल गई तो निकल गई। अब वो कर्म के रूप में हो गया, उसको अब दुबारा उस शेप में नहीं ला सकते। इसलिए तोल के बोलो, कम बोलो और संयमित बोलो।

3. निमित्तपन का अभ्यास : हमारे परिवार में हम किसी के पिता हो सकते हैं, किसी के पति हो सकते हैं, किसी के पुत्र हो सकते हैं। ये आपका एक अनुवांशिक या जैविक पिता या जैविक बंधन का संकेत है, आप मालिक नहीं हैं उस व्यक्ति के या उस वस्तु के। आप निमित्त मात्र उसकी देखरेख के लिए हैं। निमित्तपन का भाव पवित्रता के आधार से आता है। जो जितना अपने आप को केयर टेकर समझता है, वो उतना ज़्यादा अपने आप को इस रूहानी पर्सनैलिटी के साथ जोड़ पाता है। नहीं तो आज दुःख का सबसे बड़ा कारण है अभिमान, ये मैं करवा रहा हूँ, मैं नहीं होता तो कुछ नहीं होता, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ कर रहा हूँ। अरे भाई, वो व्यक्ति आपका नहीं खा रहा है, अपने भाग्य का खा रहा है। आप रहेंगे तब भी खायेगा, आप नहीं रहेंगे तब भी खायेगा। इसलिए निमित्तपन के भाव से आप बंधनमुक्त रहते हैं, शक्तिशाली रहते हैं।

4. वृत्ति : किसी भी संकल्प को बार-बार दोहराने से वृत्ति का निर्माण होता है। और आज सबसे बड़ी वृत्ति दुनिया में देह और देह से सम्बंधित चीज़ों के साथ जुड़ी हुई है। उदाहरण के लिए जैसे ये पंजाबी है, गुजराती है, मराठी है, बंगाली है या ये इस पद पर है, उस पद पर है, ये नीच जाति का है, ये ऊँच जाति का है। ये हमारे संकल्पों को खराब कर रहा है। इसलिए वृत्ति में यही डालो कि यह देह नहीं, सुंदर सी चैतन्य शक्ति आत्मा है। इससे हमारा वातावरण शक्तिशाली बन जायेगा।

5. कर्म : मनुष्य का कर्म उसके संकल्पों का आईना है। हमारे कर्म में उपरोक्त चारो चीज़ें आ जाती हैं। हमारी सोच, हमारे बोल, हमारे भाव, सब उसके द्वारा दर्शाये जाते हैं। इसलिए कर्म करते हुए इस बात का ज़रूर ध्यान रखना है कि हर कर्म की प्रतिक्रिया ज़रूर होती है। जो किया है वही लौट कर आयेगा और निश्चित रूप से आयेगा। इसलिए हर कर्म के महत्व और मर्म को जानकर, उसपर विशेष ध्यान देकर रक्षाबंधन को संकल्प की धारणा से यादगार बनायें।

मन को स्पष्ट निर्देश दो... वो आपकी बात ज़रूर मानेगा

जो लोग खेल-कूद आदि से सम्पर्क रखते तो शरीर तो शक्तिशाली बनता, लेकिन अब तन के साथ-साथ मन को भी शक्तिशाली बनाना है। तो उसको शक्तिशाली बनाने से पहले देखते हैं कि वर्तमान समय मन की स्थिति कैसी है। किसी भी व्यक्ति का इलाज करते हैं तो सबसे पहले क्या करना पड़ता है? टेस्ट करवाकर देखना पड़ता है कि वर्तमान हालत क्या है? रिपोर्ट्स आने के बाद उसका इलाज करना शुरू करते हैं। उसी प्रकार मन को शक्तिशाली बनाने के लिए पहले हम एक मिनट साइलेंस में बैठते हैं। और मन को देखते हैं। जैसे हम औरों को देखते हैं इन्होंने क्या पहना है, ये कैसे चल रहे हैं, ये कैसे बोल रहे हैं, अब अपने मन को देखना है, मेरे मन में इस समय कौन से विचार चल रहे हैं? और उन विचारों को देखते हुए जो विचार उसमें से लगेगा कि इस समय आवश्यक नहीं है, मान लो आप यहाँ बैठे हैं और आप यहाँ आये हैं तो आपका इन्ट्रेस्ट है बैठने का इसलिए आये हैं। और अब अगर बाहर से कोई आता है और पीछे से आपको कहता है कि भाई साहब 5 मिनट बाहर आओ ना। तो आप क्या कहेंगे? अभी नहीं। इस सेशन के बाद। अगर उसको अति आवश्यक काम हो तो वो फिर से एक बार थपथपायेगा। और फिर आप कहेंगे कि एक बार बोला है कि अभी नहीं, एक घंटे के बाद। तो वो व्यक्ति उस बात को स्वीकार करके चला जायेगा और ठीक एक घंटे के बाद वापिस आयेगा। उसने स्वीकार किया मतलब उसके मन ने स्वीकार किया। कान ने तो स्वीकार नहीं किया ना। किसने स्वीकार किया? उसके मन ने मेरी बात को स्वीकार किया। अगर दूसरे का मन मेरी बात को स्वीकार कर सकता, तो क्या मेरा अपना मन मेरी कही हुई बात को स्वीकार नहीं करेगा! करेगा। लेकिन हमें उससे उस तरह से बात करनी पड़ेगी। अब अगर हम यहाँ बैठे हैं और मन में विचार आ जाये कि पता नहीं पीछे घर पर क्या हो रहा है। पीछे ये छोड़कर आये थे, वो छोड़कर आये थे। बच्चों के एग्ज़ाम चल रहे थे क्या हो रहा है? अब ये विचार जो अभी नहीं चाहिए। तो क्या बोलना होगा? अभी नहीं कभी और... बहुत स्पष्ट निर्देश देना होगा। अभी नहीं एक घंटे बाद। अगर वो फिर भी आये तो फिर? स्टॉप! अभी नहीं एक घंटे बाद। एक बार, दो बार, तीन बार, उससे ज़्यादा नहीं। वो आपकी बात मानेगा। किसका मन है? मेरा। लेकिन फिर भी क्या कहते हैं कि मन तो हमारी बात मानता ही नहीं। मन कैसा है, मन घोड़ा है, चंचल है, भागता रहता है, कन्ट्रोल में नहीं है। क्यों कन्ट्रोल में नहीं है? क्योंकि हमने उसको कभी कन्ट्रोल किया ही नहीं। एक छोटा बच्चा है, उसको बताया गया है कि अभी चुपचाप यहाँ बैठना है। तो इसलिए वो बैठा है। अगर उसको बताया नहीं जाये तो वो यहाँ खेलेगा, कूदेगा, जम्प करेगा, हम क्या कहेंगे कि बच्चा बिगड़ा हुआ है। वास्तव में बच्चा बिगड़ा हुआ नहीं है, हमने ही उसको मैसेज नहीं दिया है कि अभी क्या करना है। मन चंचल नहीं है, हमने ही उसको सिखाया नहीं है कि कब क्या करना है। जैसे ही हम उसको सिखाना शुरू कर देंगे तो क्या हो जायेगा? वो हमारे निर्देशों के अनुसार चलना शुरू कर देगा। कोई दबाव से नहीं, ज़बरदस्ती से नहीं।

ब्र.कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये,
आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या
बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

वेंगुर्ला-सिंधुदुर्ग(महा.)। 'ईश्वरीय शक्ति द्वारा स्वर्णिम युग की स्थापना' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मलाकिया डी.सूज़ा को साहित्यिक क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदानों के लिए ईश्वरीय स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. सुनंदा,सबज़ोन इंचार्ज,पुणे। साथ हैं ब्र.कु. शोभा,प्रभारी,गोवा व सिंधुदुर्ग, दिलीप गिरप,चेयरपर्सन,म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, डॉ. राजेश उबाले व ब्र.कु. कंचन।

गरोठ-म.प्र.। गरोठ जेल में आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् जेलर नवीन नीमा को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. समिता, ब्र.कु. नेहा तथा अन्य।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:21 PM Page 5

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

अब समय की मांग यही है कि हमें अपने संकल्पों पर ध्यान देकर कार्य करना पड़ेगा। क्योंकि कार्य बहुत गम्भीर है, हल्का नहीं है, इसलिए हमें संकल्पों को भी हल्का नहीं करना है। आने वाले समय में बहुत कुछ ऐसा बदलेगा जिसमें अगर हमने पहले अपने संकल्पों पर ध्यान नहीं दिया होगा तो वो संकल्प वैसे ही चल जायेंगे और वो फलीभूत हो जायेंगे। जिस तरह से हमें रोज़ ये सिखाया जाता है कि नकारात्मक नहीं सोचो, सकारात्मक सोचो। ऐसे हमने जितनी बार भी नकारात्मक संकल्प किये होंगे, कर रहे होंगे या करेंगे, वो सारे कभी न कभी हमारे रास्ते में आड़े आते हैं और हमें तंग भी करते हैं चाहे वो क्षणिक रूप से ही करें, लेकिन करते तो हैं। कुछ हद तक अभ्यास से इसपर काबू पाया जा सकता है लेकिन परमानेंट करने के लिए उसके साथ पैगम्बरों और महात्माओं की तरह तपस्या करनी होगी। एकान्त में बैठकर, एक संकल्प को लेकर अगर हम बार-बार रिपीट करते हैं, इसपर अडिग रहते हैं तो वो निश्चित रूप से फलीभूत होगा ही होगा। माना कि यह कार्य कठिन है, लेकिन मुश्किल नहीं है। समझा जाता है कि मन की ये अद्भुत शक्ति जिसको हम संकल्प कहते हैं, वो जो हर क्षण-हर पल आपसे निकल रहा है। लेकिन जब हम किसी एक संकल्प पर कार्य करते हैं तो उसपर हमारी सारी इन्द्रियां एकाकार होकर एक ही दिशा में कार्य करती हैं, जिससे और चीज़ें भी ठीक होनी शुरू हो जाती हैं। उदाहरण के लिए दुनिया में सबसे नैचुरल चीज़ है हमारी सांसें। एक सांस के बाद दूसरी सांस आनी है, ये निश्चित है। जिस प्रकार एक सांस के साथ दूसरी सांस आनी निश्चित है, उसी प्रकार आपने एक संकल्प किया, उसके बाद दूसरे संकल्प आने ही हैं, ये निश्चित है। जैसे आपने एक संकल्प किया कि मैं बुद्धिमान हूँ, स्वस्थ हूँ, तो उस स्वास्थ्य के संकल्प के पीछे जैसे खाने की, कुछ एक्सरसाइज़ की, नींद की, नियम कानून की, कुछ न कुछ ऐसी बातें याद आती रहेंगी। तो इससे पता चलता है कि एक संकल्प के पीछे हज़ारों ऐसे संकल्प चलने लग ही जायेंगे। लेकिन यदि वो एक संकल्प नकारात्मक होगा तो सभी संकल्प नकारात्मक ही होंगे। संकल्प भी भेड़ चाल समझता है। एक के पीछे सारे चल पड़ते हैं। इसलिए सावधान होकर भले आप एक संकल्प करो, दो संकल्प करो, लेकिन सकारात्मक करो। ये संकल्प आपको आने वाले समय में मज़बूती प्रदान करेंगे। तो हम सभी पाठकों से यही अनुरोध करना चाहेंगे कि जब कभी भी आप कोई ऐसा संकल्प करो तो उसके पीछे वाले संकल्पों पर भी आपको ध्यान देना होगा। चाहे वो नकारात्मक हो या सकारात्मक हो। इससे ही मन को अद्भुतम बनाया जा सकता है।

दूरदृष्टा या कोई महात्मा या कोई रिसर्चर किसी एक बात को लेकर यदि सोचता है तो उसमें सफलता मिलती जाती है। कारण ये नहीं है कि उन्होंने एक दिन में ये कार्य कर लिया, लेकिन उसको करने के लिए उन्होंने काफी समय अपने ऊपर दिया तथा समय-समय पर उस बात के लिए अपने आप को बदला। इम्प्रूव किया। ऐसे ही हमें भी अपने संकल्पों को लेकर कार्य करना है।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-19(2018-2019)

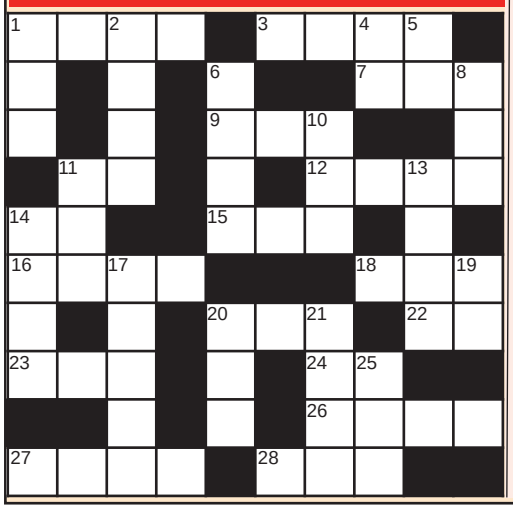

ऊपर से नीचे

1. एक से अधिक, कई (3)
2. दिलवाड़ा मन्दिर तुम बच्चों का ही...है (4)
4. कार्य, काम (2)
5. लीन, मग्न (2)
6. अन्तिम, अन्त में (4)
8. ....से निहाल कींदा स्वामी (3)
10. प्रतिकार, प्रतिशोध (3)
11. काबिल, लायक, अच्छा (3)
13. राजा, शासक, सम्राट (4)
14. परिश्रम, श्रम, प्रयास (4)
17. बलवान, मल्ल, कुश्ती लड़ने वाला (5)
19. शर्म, हया, इज्जत (2)
20. मिठरा घुर तो....(3)
21. शिक्षा, समझानी, समझ (4)
25. यात्रिक, राही, यात्री (3)

बाएं से दाएं

1. अन्धकार, अंधेरा, तिमिर (4)
3. अमीर, जमीदार, धनवान (4)
7. युक्ति, तरीका (3)
9. कभी अपना खाना नहीं....करना है, बेकार (3)
11. देवता, दिव्य लोग (2)
12. राजसभा, सभा (4)
14. बादल, घटा, नीरद (2)
15. जुकाम, सर्दी (3)
16. हर वक्त, हर समय, हर क्षण (4)
18. दुपट्टा, पश्मीने की चादर का जोड़ा (3)
20. घबराहट, दम घुटने की अवस्था (3)
22. मुस्लिम धर्म का एक मुख्य कर्म, हज्ज (2)
23. द्रव्य, अस्थिर (3)
24. एक समुद्रिक जीव जिससे मोती मिलते हैं (2)
26. औज़ार, यन्त्र (4)
27. डरावना, भयंकर, उग्र (4)
28. सैंकड़ा, सौ (3)

-ब्र.कु. राजेश, शान्तिवन

Brahma Kumaris Nagthane HONOURED WITH "India Thai Friendship Award 2019" for "Best NGO for meditation in Western India"

Bangkok (Thailand): AKVK Media, AC Media corporation along with National Institute for Education and Research organized "INDIA THAI FRIENDSHIP AWARD 2019" at The Bangkok Palace, Bangkok, Thailand.

Miss Marisa Phaekwamfee,Executive vice President Phillip Capital and Dr. Abhiram Kulshreshtha,Director General Of National Institute for Education and Research offered the "INDIA THAI FRIENDSHIP AWARD 2019" to Dr. Bk Dipak Harke, Dr. Bk Suvarna and Medal was Presented to Bk Sister La,National Co-ordinator of Brahma Kumaris Thailand and others members in the presence of Prof. Jaran Maluleem,Head of Indian Studies Programme and Former Advisor to Thai Prime Minister.

धमतरी-छ.ग.। विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. नवनीता, कांग्रेस जिला अध्यक्ष मोहन लालवानी, भाजपा जिला अध्यक्ष रामू रोहरा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता, विधानसभा विधायक रंजना साहू, वन मण्डल अधिकारी अमिताभ वाजपेयी, समाज सेवी हरमिन्दर छाबड़ा, नगर पालिका निगम सभापति राजेन्द्र शर्मा तथा अन्य।

मुम्बई-बोरीवली। विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए माला सिंह,चेयरपर्सन एंड एम.डी.,पी.ई.सी. ग्रीनिंग इंडिया, प्रतिमा कानन,फिल्म एंड टीवी आर्टिस्ट, मीना काकू,अध्यक्षा,इनर व्हील क्लब, ब्र.कु. दिव्यप्रभा तथा अन्य।

गांधीनगर से.28-गुज.। विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करते हुए डिप्टी कंज़रवेटर ऑफ फॉरेस्ट, वाइल्ड लाइफ एक्सपर्ट, नेचर एजुकेशनलिस्ट, फ्रीआंस राइटर हेमंत सुथार व ब्र.कु. कैलाश बहन। उपस्थित रहे अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता व इंटरनेशनल सोसाइटी फोर टुथ कॉन्शियसनेस के संस्थापक सह निर्देशक स्वामी ओंकारानंद सरस्वती साथ ही उनके शिष्य रत्न युवा स्वामी विवेकानंद सरस्वती, बार्क्लेय बैंक के पूर्व मैनेजर एवं ग्लोबल हॉस्पिटल,माउंट आबू के ट्रस्टी ब्र.कु. रश्मिकांत।

अमरावती-महा.। समाज सेवा अभियान के आगमन पर सम्मान कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए सोशल विंग एग्ज़ीक्यूटिव मेम्बर ब्र.कु. आशा, समाजसेवी गोविंद लाहोटी, पूर्व सहायक पुलिस कमिश्नर अनिल देशमुख, ब्र.कु. सीता तथा अन्य।

इंदौर-म.प्र.। विश्व पर्यावरण दिवस पर सभी को पौधा भेंट करते हुए पूर्व न्यायाधीश बी.डी. राठी।

छोटा उदेपुर-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर पुलिस ग्राउण्ड में आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मोनिका को आदिवासी क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए अवॉर्ड देकर सम्मानित करते हुए जिला कलेक्टर सुजल मयात्रा, जिला विकास अधिकारी रचित राज, सुपरीन्टेंडेंट ऑफ पुलिस व अन्य अधिकारी।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:21 PM Page 6

प्रकाश की दैदीप्यमणि दादी प्रकाशमणि

दादी प्रकाशमणि को पीस मेडल से सम्मानित करते हुए यू.एन. सेक्रेट्री जनरल डॉ. परवेज़ डेक्युलर।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विशाल आध्यात्मिक संगठन का सफल नेतृत्व करते हुए दादी प्रकाशमणि जी ने अपने जीवनकाल में विश्व कल्याण का परचम लहराया। ऐसी महान विभूति का जन्म दीपावली के शुभ दिन पर सन् 1922 में अविभाजित भारत के सिंध प्रांत के हैदराबाद शहर में हुआ था। दादी जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थीं। उनका इस संस्था में एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में पदार्पण हुआ। उस समय इस संस्था को 'ओम मंडली' के नाम से जाना जाता था। उन्होंने 14 वर्ष की अल्पायु में ही अपना जीवन मानव कल्याण हेतु प्रभु अर्पण कर दिया। आप

बापदादा के साथ दादी प्रकाशमणि तथा दादी जानकी।

परमात्म शिक्षा से प्रेरित होकर अपने जीवन में पवित्रता, शांति, प्रेम, सरलता, दिव्यता, नम्रता, निरहंकारिता जैसे विशेष गुणों को अपनाकर आध्यात्मिक प्रकाश को फैलाने और मानव को महान बनाने के कार्य में सफल रहीं। सन् 1969 में प्रजापिता ब्रह्मा ने अध्यात्म की मशाल दादी जी को सौंप दी और स्वयं सम्पूर्ण बन गए। पिताश्री जी के अव्यक्त होने के पश्चात् दादी जी ने सम्पूर्ण मानवता की सेवा करते हुए एक विशाल आध्यात्मिक संगठन को साथ लेकर विश्व सेवा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने विभिन्न जाति, वर्ग, रंग-भेद को दूर करने के लिए मानवता में विश्व-बंधुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को जगाने के लिए आत्मिक एवं प्रभु संतान की स्मृति दिलाई तथा परमात्म-अवतरण के ईश्वरीय संदेश को अल्प समय में सम्पूर्ण विश्व के क्षितिज पर गुंजायमान किया।

आपके कुशल नेतृत्व के कारण संस्थान को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के तौर पर आर्थिक एवं सामाजिक परिषद का परामर्शक सदस्य बनाया एवं यूनिसेफ ने भी अपने कार्यों में अपना सहभागी बनाया। आपके नेतृत्व में संस्था ने विश्व शांति हेतु कई रचनात्मक एवं सार्थक कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए। उनकी उपलब्धियों को देखकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1987 में एक अंतराष्ट्रीय तथा 5 राष्ट्रीय स्तर के 'शांतिदूत' पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

ज्ञानचर्चा करते हुए दादी प्रकाशमणि तथा गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ दादी प्रकाशमणि।

कार्यक्रम में यू.एन. जेनरल एसेम्बली के तत्कालीन प्रेसीडेंट एस.आर. इंसान अली के साथ दादी प्रकाशमणि तथा ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा।

साउथ अफ्रीका के तत्कालीन राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि।

कार्यक्रम में मदर टेरेसा के साथ दादी प्रकाशमणि।

ज्ञानचर्चा करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी, दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी तथा ब्र.कु. आशा।

ज्ञानचर्चा करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा दादी प्रकाशमणि। साथ हैं ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. आशा तथा अन्य।

आध्यात्मिक चर्चा करते हुए लालकृष्ण आडवाणी तथा दादी प्रकाशमणि।

तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी के साथ दादी प्रकाशमणि।

कनकपुर के स्वामी जी के साथ दादी प्रकाशमणि।

नेपाल के तत्कालीन महाराज वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव दादी प्रकाशमणि को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:21 PM Page 7

नव निर्माण के कार्य के लिए नम्र बनो

आप बहुत लक्की हो। हों भी क्यों ना! स्वयं भगवान ने आपको सेलेक्ट कर विश्व परिवर्तन के कार्य हेतु अपनी भुजा बनाई। इस दुनिया में छोटा सा स्टेटस पाने के लिए कितनी मेहनत करते, पर यहाँ स्वयं भगवान ने हमारे में वो खूबी देखी जो पूरे विश्व में सुख शांति के साम्राज्य की स्थापना के लिए चुना। हमने छोड़ा ही क्या! पाया बहुत। जिसकी जीवन नैया का खिवैया स्वयं भगवान हो, उसको छोड़ने का क्या गम! छूटी भी तो बुराइयां, कमज़ोरियां, जो हमें जन्म-जन्म से तंग कर रही थी। तो ये हमारा सबसे बड़ा भाग्य है ना! तो बस, इस अवसर को नम्र बनकर निर्माण के कार्य में लगाएं।

अपने को सदैव वेरी-वेरी लक्की समझो। वेरी लक्की समझने से विघ्न सहज ही विनाश कर सकेंगे। पता नहीं मेरी तकदीर में क्या है! ऐसा संकल्प उठाना माना संशय। मालूम नहीं - चल सकूंगा या नहीं, जाता हूँ ब्राह्मण परिवार में तो यह टक्कर आता, दुनिया में जाता तो यह विघ्न आते। आखिर क्या करूं। यह संकल्प भी संशय की निशानी है। मैं वेरी लक्की हूँ, लक्की उसको माना जाता जिसे दुनिया की अनेक ठोकरें आवें। पत्थर भी पूजनीय तभी बनता जब पानी की अनेक चोटें खाता। इसलिए कभी किन्हीं बातों से थको नहीं। मैं हमेशा समझती कि पेपर आना माना मुझे लक्की बनाना। विघ्न आना माना भाग्यवान बनाना। अगर पेपर ही नहीं दिया तो मुझे विजयी कौन मानेगा! हज़ार पेपर आयें तो भी मैं सौ प्रतिशत पास रहूँ। हरेक अपना-अपना पेपर ले। पढ़ाई ही मेरा पेपर है। सारा ब्राह्मण कुल मेरा मास्टर है। कोई भी मेरे सामने आता तो बुद्धि में यही रहता कि ये मेरे से कितनी रूहानियत भरकर जायेगा। जितना उसको आत्मिक शक्ति मिलेगी, बल मिलेगा, उतना ही मुझे मार्क्स मिलेंगी। हमें रूहानियत की आत्मिक शक्ति का दान देना है। जितना दाता बनो उतना पुण्यात्मा बनेंगे। मुझे नयनों से भी पुण्य करना है। अपनी रूहानियत की शक्ति का भी पुण्य देना है। मुझे देना सीखना है, मैं यह न सोचूँ कि यह मुझे दे। मैं दाता हूँ। जितना मैं दूंगी उतना मेरा महत्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है। ऐसे नहीं मैं इसे स्नेह देती फिर भी यह मेरी ग्लानि करता। मुझे कोशिश करनी है एक भी काँटा न बने, अपना काम है सबको आत्मिक दान देना। दान देने में विघ्न तो अनेक आयेंगे क्योंकि दान लेने वाला कोई कैसा है, कोई कैसा। मैं हमेशा समझती - हर एक मेरे मास्टर हैं, मैं हर एक से सीखती हूँ।

नफरत ही सभी झगड़ों का मूल

कभी भी अपने दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं उठाओ। झगड़े का कारण है एक दो से नफरत। जड़ होती नफरत, बन जाता परचिन्तन, हो जाता दुश्मन। पहले होगी ईर्ष्या, वह पैदा करेगी नफरत, फिर परचिन्तन चलेगा, जिसका परचिन्तन करते वह दुश्मन बन जाता। एक बोल जीवन भर के लिए दुश्मन बना देता। एक ऐसा शब्द भी बोला जो किसी के हार्ट पर लग गया तो वह ज़िन्दगी भर दुश्मन बना देता। मैं ऐसा क्यों करूं!

ज़िद्द का संस्कार धोखे में डालता

ब्राह्मणों में सबसे बड़े से बड़ा नुकसान कारक अवगुण है - "ज़िद्द का स्वभाव", जिसमें ज़िद्द है उस पर मुझे बड़ा रहम आता। वह बड़ा धोखा खाते। सबसे ज़्यादा नुकसान इस ज़िद्द से होता है। ज़िद्द मनुष्य को रसातल पहुँचा देता। इसलिए कभी किसी बात का ज़िद्द नहीं करना। कोई रांग है तो राइटियस बुद्धि से निर्णय करना है। ज़िद्द के स्वभाव से अपने को धोखा न दो। निर्णय करो। एक दो को सहयोग दो, राय दो, अगर कोई ज़िद्द पकड़ता है तो आप हल्के हो जाओ। लाइट हो जाओ। स्वयं को लाइट और माइट की मस्ती में रखो तो कभी जोश नहीं आयेगा।

निर्मान बनना माना समा लेना

नव निर्माण के कार्य के लिए नम्र बनो। पुरुषार्थ से डरो नहीं। जब कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय उसकी मान लो। आप शीतल बन जाओ। अगर उस बात को लेकर दुश्मनी हो जाती तो नुकसान होता है। इसलिए बाद में आपस में मिलकर मीठी धारणा की रूह-रूहान करो, डिबेट नहीं करो। आपकी नम्रता का प्रभाव दूसरे पर ज़रूर पड़ेगा। एक की चर्चा दूसरे से नहीं करो। निर्मान बनना माना समा लेना। जब कोई बात आपस में नहीं बनती तो उसको छोड़कर स्व-चिन्तन में रहो। झगड़े में पड़कर ज्ञान को नहीं छोड़ो।

मर्यादा में हल्के तो निंदा के पात्र

हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउण्डेशन है ईश्वरीय मर्यादा। दुनिया में मर्यादा नहीं, हमारी है टॉप मर्यादा। अगर हम किसी पर फेथ रखते हैं, तो फेथ पर भी माया पानी डाल देती है।

ऐसे अनेक अनुभव देखते हैं। इसलिए हम कन्ट्रोल करते... कुमार-कुमारियाँ मर्यादा में रहो। एक की गलती से सारे ब्राह्मणों को चोट लग जाती है। एक के कारण हमें सबको बांधना पड़ता है। सेन्टर पर कुमारियाँ अकेली रहती, आप उनसे बैठकर बातें करो - यह मर्यादा नहीं है। मैं कहती इस बात में समझो हम सन्यासी हैं। कुमार-कुमारी माना सन्यासी। सन्यासी माना हँसना, बोलना, वृत्ति-दृष्टि सबका सन्यास। जितना यह पाठ पक्का रखेंगे उतना अच्छा। अगर हल्के रहेंगे तो टीका होगी। किसी के कैरेक्टर पर दाग लगे, यह मेरे से सुना नहीं जाता, शॉक लगता। कोई मेरे कैरेक्टर पर आँच डाले यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। परन्तु किसी का क्वेश्चन क्यों उठा - क्योंकि हल्के होकर चले।

ईश्वरीय मर्यादा इस जीवन का आदेश

ईश्वरीय मर्यादा हमारे जीवन का ऑर्डर है। बाकी कोई ऑर्डर नहीं। इसमें जितना अपनी रूहानियत में मस्त रहो, मेरा एक बाबा उसी मस्ती में रहो, यह कंगन बहुत स्ट्रिक्ट बंधा हुआ चाहिए। मैं जब यह बात बोलती तो समझते यह मार्ग तो बड़ा कठिन है। फिर बुद्धि जाती गन्धर्वी विवाह में। लेकिन जिन्होंने किया वह अभी आँसू बहा रहे हैं। रो रहे हैं। इसलिए कभी भी यह संकल्प नहीं आवे। ऐसे नहीं कम्पेनियन चाहिए। मरना तो पूरा मरना। जीने का नहीं सोचो। हमें बाबा की गोदी में जीना है। दुनिया से हम मर गये। खाने का, पहनने का, नींद का सब ऐश चला गया। हम सब त्याग चुके। त्याग माना त्याग। जिसने नींद का त्याग किया उसने सब त्यागा। 3:30 बजे मीठी नींद आती। बाबा कहता उठ। वह भी बाबा ने छीन लिया, बाकी क्या चाहिए। इसलिए हमेशा बाबा कहता बेहद के वैरागी बनो। जितना वैरागी उतना योगी रहते।

सब सेवा में सफल करो, कल किसने देखा

सेवा तो आप लोग कर ही रहे हो, जो कुछ भी है उसे सफल करते चलो। कल का क्या पता। जितना बुद्धि में सेवा है, उनका ही महान भाग्य है। परन्तु सेवा के जोश के साथ-साथ होश भी चाहिए। लौकिक को भी थोड़ा चलाना करना ठीक रहता। नहीं तो सर्विस में डिस-सर्विस हो जाती। जितना सर्विस में बुद्धि लगी रहे उतना अच्छा है, आर्टिकल लिखो, डायलॉग लिखो, अनुभव लिखो, आर्टिस्ट बनो। किसी न किसी कार्य में बुद्धि लगी रहे। सब आर्ट सीखो, वक्त पर सब काम आता है।

कुमार माना... डबल शक्तिशाली

अगर सेवा में फोर्स है, तो कुमारों के कारण। कुमार अपना तन भी लगाते, मन भी लगाते, धन भी लगाते। सभी सेन्टर्स की यह रिज़ल्ट है। आप कुमार सब चिन्ताओं से मुक्त हो। कुमार-कुमारी माना संगम के जीवनमुक्त। कोई बंधन नहीं। वृत्ति में मेरा बाबा, वायुमण्डल में वायब्रेशन है सब बाबा के बनें, कल्याण की भावना है। जीवन है बाबा की सेवा में। हम-आप दुनिया के वायुमण्डल, वायब्रेशन्स से मुक्त हैं। हम दुनिया को बाबा के वायुमण्डल में बांधते हैं।

स्वयं बाबा ने बनाई आपको अपनी भुजा!

आप सब सौ परसेंट लक्की को। आप सबको सर्विस के लिए बाबा ने अपनी भुजायें बनाई हैं। आप सब समर्पण हो। अगर आप धन से सेवा नहीं करते तो सर्विस नहीं बढ़ती। आप यह नहीं सोचो कि हमें बाबा ने नौकरी का बंधन दिया। आप धन से सहयोग न दो तो सेन्टर कैसे चले। आपका पूरा तन-मन-धन बाबा के प्रति है। आप 100 कमाओ, उसमें 25 माँ बाप को, 25 अपने लिए, तो 50 बाबा के कार्य में लगाओ। यही सोचो मैं बाबा के कार्य के लिए 5 टका कमाने गया हूँ। दुनिया ही गन्दी है। गन्दों के बीच हमें अपनी रूहानियत में रहना है क्योंकि बाबा के लिए कमा रहा हूँ। लौकिक माँ-बाप ने पाला है, उनको भी सहयोग देना मेरा फर्ज़ है। धन को परसेंन्टेज से ज़रूर बांटो।

जो कुमार अपने हाथ से पकाकर खाते हैं, मैं उन्हों को अपने से भी बड़ा मानती हूँ। आप धन्य हो। अगर सूखी रोटी खाकर चलते, तो बाबा आपको मदद देगा। आप दो रोटी खाओ बाबा की मस्ती में रहो। ऐसे नहीं सोचो रोज़ रोज़ ऐसे कैसा होगा। अरे, रोज़ संगम थोड़े ही आयेगा। जितना तपस्वी बनो उतना धन्य बनेंगे। धन्य बनना है तो त्यागी, तपस्वी बनो। तप से ही महान बनेंगे, कर्मेन्द्रियों को वश करना ही तपस्या है। वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है। अतीन्द्रिय सुख के रस में रहो, रोटी तो घोड़े को घास है, इसका रस नहीं।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:21 PM Page 8

गोविंदा आला रे आला...

झाँको... मनमोहन की झाँकी में

सभी श्रीकृष्ण को सुंदर कहते, सोलह कला सम्पूर्ण मानते, उसके मनमोहक रूप को देखने लिए लालायित रहते, लेकिन हमने कभी सोचा कि हममें भी ये सुंदरता है, जिसे हमने अभी तक निहारा ही नहीं। हममें निहित कलाओं के ऊपर भी क्या कभी हमारा ध्यान गया? तो मनमोहन की झाँकी के साथ अपने अंदर भी झाँक कर देखो तो आप पायेंगे कि आप भी इतने ही सुंदर और आकर्षक हैं।

श्रीकृष्ण की झाँकियां तो हम हर वर्ष बड़ा ही आकर्षक बनाते हैं और बनायें भी क्यों ना, वो है ही इतना आकर्षक! परंतु आज आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वयं में झाँककर देखें कि क्या हम भी इतने ही आकर्षक हैं? हमारे दामन में कहीं कोई दाग तो नहीं! तब पायेंगे कि अरे, हम सभी आज अपने ही संस्कारों से परेशान हैं, दुःखी हैं और दूसरे भी हमारे संस्कारों की वजह से दुःखी हैं।

आज के परिदृश्य को देखें तो पायेंगे कि हर क्षेत्र में तमो की प्रधानता है। ऐसे में श्रीकृष्ण की झाँकी और श्रीकृष्ण का आह्वान कहाँ तक सार्थक है! श्रीकृष्ण के मंदिरों में हर प्रकार की स्वच्छता बरती जाती है, शुद्ध भोजन का भोग लगाया जाता है। लोग अशुद्ध संकल्पों, व्यवहारों एवं विकारों से भी बचकर रहते हैं। इसलिए सबसे पहले श्रीकृष्ण का आह्वान करने के लिए हमें आहार, व्यवहार, विचार के शुद्धिकरण की आवश्यकता है। आज घर घर में विषय-वासनाओं का वास है। सभी के मन में दर्द है, असंतोष है। श्रीकृष्ण के पधारने के लिए कोई जगह ही खाली नहीं है। सभी के हृदय रूपी सिंहासन पर किसी न किसी विकार ने कब्ज़ा किया हुआ है। उस मधुसूदन को अशुद्ध हाथ छू नहीं सकते, अपवित्र दृष्टि देख नहीं सकती, अपवित्र वृत्ति वाले लोग उसके पास पहुंच भी नहीं सकते, विकारी व्यक्ति का हाथ उसके लिए भोजन बना नहीं सकता। इसलिए जब तक दिव्य गुणों की खुशबू से नर-नारी का मन मंदिर नहीं बनेगा, तब तक श्रीकृष्ण, जो देवताओं के भी सम्राट हैं, वो यहाँ आ नहीं सकते। इसलिए हे मानव, इस पुरुषार्थ से अपने आप को उस मनमोहक की झाँकी को देखने योग्य बनाओ। स्वयं को ज्ञान योग के चंदन का तिलक दो, तब जाकर जन्माष्टमी के साथ सच्चा न्याय होगा।

हम इस बार परंपरागत रूप से ही कृष्ण की झाँकी बनाकर इस महान त्योहार को मनायेंगे या अपने मन को भी उस मनमोहक की तरह बनायेंगे, जिस मुरलीधर को हम जाने अनजाने भी भूल

नहीं पाते! आज के दौर में आवश्यकता है अपने मन में उठने वाले राक्षसी वृत्तियों का संहार कर मन को मनमोहन जैसा सुंदर बनाने की। तो आइये, इस तरह से इस बार हम जन्माष्टमी के त्योहार को मनाकर अपने जीवन में देवत्व लाने का संकल्प लें।

यह जीवन है...

पाने को कुछ नहीं, ले जाने को कुछ नहीं, उड़ जाएंगे एक दिन तस्वीर से रंगों की तरह, हम वक्त की टहनी पर बैठे हैं परिंदों की तरह।

खटखटाते रहिए दरवाज़ा, एक दूसरे के मन का, मुलाकातें ना सही, आहटें आती रहनी चाहिए।

ना राज़ है ज़िन्दगी
ना नाराज़ है ज़िन्दगी
बस जो है, वो आज है, ज़िन्दगी।

ज्ञान के नित्य अध्ययन से बनेगा जीवन सुंदर

- गतांक से आगे... रोज़ जब अपने मन को ज्ञान की बातों से स्वच्छ करते जायेंगे तो मन सुन्दर, निर्मल, पवित्र होने लगेगा। कई बार कई लोग कहते हैं कि हमारे मन के अन्दर कभी-कभी बहुत बुरे विचार चलते हैं, चाहते नहीं हैं फिर भी चल जाते हैं। क्या करें?

जिस प्रकार गंदे पानी से भरे मटके में साफ पानी लगातार डालते रहने से एक समय ऐसा आता जब उसकी सारी गंदगी खत्म हो जाती और साफ पानी रह जाता, उसी प्रकार नकारात्मकता से भरी बुद्धि को ज्ञान की बातों से, ज्ञानामृत से सींचते जाओ तो वो किचड़ा निकल जायेगा और एक दिन मन बुद्धि दोनों स्वच्छ और निर्मल बन जायेंगे।

एक मटका है जिसके अन्छर गंदा पानी भरा है। मटका फिक्स है, उसको उठा नहीं सकते हैं। तो क्या करेंगे? साफ पानी का नल खोल दो, वो पानी गिरते-गिरते फिर अन्दर का पानी ओवरफ्लो होता जायेगा और ओवरफ्लो होते...होते...होते..., एक समय ऐसा आयेगा कि मटके के अन्दर से सारा गंदा पानी निकल गया होगा और वह साफ पानी से भर गया होगा।

ठीक इसी तरह बुद्धि के अंदर नकारात्मक सोचने की आदत पड़ी हुई है, उसको निकालने की विधि क्या है? उसको निकालने की विधि यही है कि रोज़ उसको ज्ञान की बातों से, ज्ञानामृत से, सींचते जाओ तो वो किचड़ा निकलता जायेगा... और एक समय आयेगा जब मन और बुद्धि स्वच्छ और निर्मल बन जायेंगे। तो क्या हम अपने मन और बुद्धि को इतना स्वच्छ और निर्मल बनाना नहीं चाहते हैं? उसके लिए तो अध्ययन करने की आवश्यकता है। तब हमारा मन स्वच्छ और निर्मल हो जायेगा।

अंत में संजय यही कहता है कि इस प्रकार हमने व्यास जी की कृपा से ये अद्भुत संदेश सुना, जो मेरे शरीर को भी रोमांचित कर रहा है। जब मैं इस पवित्र वार्ता का बारंबार स्मरण करता हूँ, तब प्रति-क्षण गद्गद् हो उठता हूँ। जहाँ योगेश्वर है, वहाँ ऐश्वर्य, विजय, अलौकिक शक्ति तथा

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

नीति भी निश्चित रूप से रहती है। ऐसा मैं मानता हूँ। संजय ने जो अनुभव किया वही धृतराष्ट्र को सुनाया। इतना सुन्दर संदेश कि उसकी स्मृति करने से भी मैं गद्गद् हो उठता हूँ। रोज़ उसका अध्ययन करेंगे तो जीवन कितना सुन्दर बन जायेगा! अंत में भगवान अर्जुन से पूछते हैं कि क्या तुमने इस गुह्य ज्ञान को एकाग्रचित्त होकर सुना है? क्या अब तुम्हारा अज्ञान और मोह दूर हो गया है? तो अर्जुन कहता है, हे प्रभु! अब मेरा मोह दूर हो गया है। वह प्रभु की शरण में आ गया और कहा कि अब मेरा मोह दूर हो गया। आपके अनुग्रह से मुझे स्मृति आ गई है, अब मेरे मन में कोई संशय नहीं, कोई सवाल नहीं है। अब मैं संशय रहित तथा दृढ़ हो गया हूँ कि मुझे क्या करना है। अपने जीवन में उसके लिए मैं दृढ़ हूँ और आपके वचन का पालन करूंगा।

आज इस अठारहवें अध्याय के अंतिम क्षण में जब हम पहुँचे हैं, क्या आपकी तरफ से, हम यह निश्चय करें कि आप भी अठारह अध्याय का ज्ञान सुनकर के अनुग्रहित हुए हैं? तो क्या आप अपने मन के अन्दर भी कोई दृढ़ संकल्प करना चाहेंगे अर्जुन की तरह? जैसे अर्जुन ने संकल्प किया कि मैं दृढ़ हूँ, मैं आपके वचनों का पालन करूंगा, संशय रहित अब मेरा मन स्वच्छ हो गया है। अब मेरे मन में कोई संशय नहीं है। कम से कम इतना संकल्प हम सभी अवश्य करें कि आज के बाद नित्य प्रतिदिन कभी भी सारे दिन में, कभी भी ज्ञान की बातों से, अपने मन को निरंतर सुविचारों से भरते हुए, हम अपने जीवन को सुंदर, सुगंधित, खुशबूदार बनाते हुए, अपने गृहस्थ जीवन को सुखमय बनायेंगे।

- क्रमशः

ख्यालों के आईने में...

ज़िन्दगी को गमले के पौधे की तरह मत बनाओ जो थोड़ी सी धूप लगने पर मुरझा जाये... ज़िन्दगी को जंगल के पेड़ की तरह बनाओ जो हर परिस्थिति में मस्ती में झूमता रहे।

कहीं मिलेगी ज़िन्दगी में प्रशंसा,
तो कहीं नाराज़गियों का बहाव मिलेगा...
कहीं मिलेगी सच्चे मन से दुआ,
तो कहीं भावनाओं में दुर्भाव मिलेगा...
तू चलाचल राही अपने कर्मपथ पर,
जैसा तेरा भाव वैसा प्रभाव मिलेगा...।

रायपुर-छ.ग.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर रेलवे स्टेशन पर आयोजित नशा मुक्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का शुभारम्भ करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी, ए.डी.आर.एम. अमिताभ चौधरी और एस.एस. लाकिया, सीनियर डिविज़नल कमर्शियल मैनेजर तन्मय मुखोपाध्याय, रेल मंडल प्रबंधक कौशल किशोर, ब्र.कु. सविता तथा अन्य।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:22 PM Page 9

ईश्वरीय अनुकृति का दिव्य दर्शन 'दादी प्रकाशमणि जी'

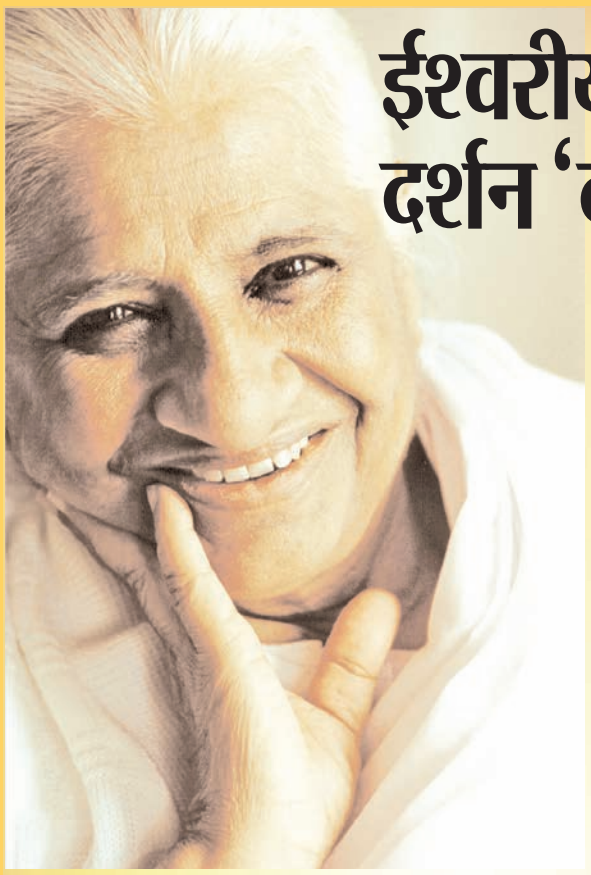

- ब्र.कु. रमेश, त्रिलोकपुरी, दिल्ली

कागा किसका धन हरे, कोयल किसको देय
मीठे वचन सुनाय के, जग अपना कर लेय।।

दादी प्रकाशमणि के मुखारविन्द से निकलने वाले हर एक शब्द और वाक्य सुनकर सभी ब्रह्मावत्स आंदोलित, हर्षित मुख हो उठते थे। तभी तो सभागार में दादी जी के प्रवेश करते ही बिना किसी प्रेरणा के सभी खड़े होकर दादी जी का स्वागत करते और जाते समय खड़े होकर आभार व्यक्त करते थे। ये दादी जी के ओज, तेज, स्नेह और ममतामयी प्रत्यक्ष ईश्वरीय पालना की मेरे जीवन की अनुभूति है। जो कि आज प्रेरणा रूप से मेरे जीवन को सिंचित, पोषित करके आगे बढ़ा रही है। दादी जी के द्वारा ही इस ब्राह्मण जीवन में साक्षात ईश्वरीय पालना की दिव्य अनुभूतियों से पोषित मैं यह देखता था कि स्नेहमयी वाणी, समदर्शी दृष्टि, हृदयस्पर्शी सम्बोधन द्वारा दादी जी के सम्मुख आने वाली हर आत्मा को आत्मियता (अपनेपन) की अनुभूति होती थी।

ईश्वरीय पालना देने वाली दादी से मेरा एक निजी व्यवहारिक साक्षात्कार :-

हर वर्ष बाप-दादा मंगल मिलन कार्यक्रम के सुअवसर पर कुछ आत्माओं को मधुबन में भिन्न-भिन्न सेवाओं का विशेष सौभाग्य प्राप्त होता है। मेरे जीवन में भी ऐसे अनेक अवसर आए। ऐसी स्मृतियों के झरोखे से एक वृत्तांत, अनुपम अनुभूति इस प्रकार है। मुझे एक बार बाप-दादा मिलन कार्यक्रम में आये ब्रह्मावत्सों (भाई-बहनों) का दादियों से मिलन, टोली और उपहार वितरण समारोह में व्यवस्था प्रबंधन में सेवा-सहयोग का अवसर मिला। पहले भी(बचपन में) दादी जी से मिला था किन्तु यथार्थ ज्ञान, समझ नहीं थी। परंतु अब जो अनुभव कर रहा था वह अद्भुत, अविस्मरणीय, स्वप्निल लग रहा था। मैं दादी जी के इतने निकट खड़ा था कि मैं जब चाहूँ उन्हें स्पर्श कर सकता था। किन्तु स्पर्श की आवश्यकता ही नहीं थी, क्योंकि उनसे प्राप्त हो रहे दिव्य प्रकम्पनों से हृदय हर पल भाव-विभोर हो रहा था। मैं देखकर अनुभव कर रहा था कि दादी जी के सामने से दो पल की दृष्टि पाने वाली आत्मायें उनकी स्नेहमयी दृष्टि पाकर भरपूर हो तृप्त अनुभव करके जा रही हैं, और मेरा भाग्य कि दो-चार पल नहीं, डेढ़ से दो घंटे तक मैं उस स्नेहमयी, तेजोमय, पवित्रता और शान्ति की अनुकृति के कुण्ड के प्रभाव क्षेत्र में ही समाया हुआ था। वहाँ पर मैं कई बार इतना लवलीन हो जाता था अपनी स्वप्निल प्राप्तियों में कि दूसरे सेवाधारी मुझे मेरी सेवा की याद दिलाते थे।

मीठी दादी जी इतनी निर्मलचित्त थीं कि छोटे-बड़े का भेद कभी किसी भी ब्राह्मण को शायद ही अनुभव हुआ हो। बच्चों के साथ उनका बाल रूप भी दिखता था। दादी जी निमित्त भाव से सब पर स्नेहमयी दृष्टि, निर्मान भाव से सर्व प्रति बोल-व्यवहार का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बनीं। एक बार स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् सभी सेवाधारियों को दादी अपने हाथों से टोली दे रही थीं। मेरी बारी अंत में आई तो मैं अपने घुटनों के बल बैठ दादी से दृष्टि लेते हुए टोली(तिल-गुड़ के छोटे-छोटे लड्डू) ले रहा था, तभी दादी ने टोली देते थोड़ी आँखें बड़ी की और मुस्कराते हुए टोली हाथ में रख दी। मैं खोया-सा बैठा रहा। दादी जी ने दुबारा हाथ में थोड़ी टोली डाल दी। मैं बैठा ही रह गया, तो अमृत भाई(जो दादी की सेवा में थे) ने कहा कि भाई जी हो गया। मैं सचेत हो उठा। फिर दादी ने भी मेरे साथ टोली खाई। मैं चकित भी और हर्षित भी था कि इतनी बड़ी हस्ती और मुझ साधारण से व्यक्ति के साथ इतना अपनापन वाला व्यवहार!

यह सब देखकर ऐसा लगा कि दादी जी कितना निर्मानचित्त, कोमल हृदय हैं। अपनी निर्मल वाणी से सबको स्नेह, प्रेम का अनुभव कराकर मन शांत कर, हृदय को परिवर्तन कर देने वाली, ऐसी थी हमारी प्रिय दादी प्रकाशमणि जी। दादी में मैंने देखा बिल्कुल आत्मीय भाव रहता था। दादी के सामने जो भी आता, उसे गहरे अपनेपन की अनुभूति होती थी। उनके लिए न कोई गरीब था, न कोई अमीर, सब एक समान थे उनके लिए। हम भी जब मिलते तो हमारे मन में भी वही भाव जाग जाते जो दादी में रहते। इसलिए दादी के साथ कभी ये नहीं लगा कि ये संस्था की हेड हैं, बड़े हैं और हम साधारण हैं। इसलिए तो दादी सबकी 'दादी' बनीं। उनकी ऐसी निर्मलता और निर्मानता ने ही कई निर्माण किये और वे इतनी महान बनीं। आज हम दीया लेकर भी ढूंढें तो उनका कोई शत्रु या विरोधी नहीं मिलेगा, क्योंकि किसी विरोधी को भी उनसे सदा स्नेह ही मिला। आज कोई भी ब्रह्मावत्स उन्हें भुलाये भी नहीं भूल सकता। आज भी प्रकाश स्तम्भ पर दादी की प्रेम-पालना और स्नेहयुक्त प्रेरणादायी अलौकिक अनुभूति होती है। उनकी सिखायी हुई बातों को जीवन में धारण कर प्रेरणा लेकर हम सभी ब्रह्मावत्स उन्हें हृदय से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

मुम्बई-गामदेवी। अंतर्राष्ट्रीय व्यसन मुक्ति दिवस पर श्री षड्मुखानंद चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती सभागार,सायन में नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो, ब्रह्माकुमारीज़, नशामुक्ति मंडल तथा सलाम बॉम्बे के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में समाज को व्यसनों के प्रति जागृति दिलाने हेतु किये गये महत्वपूर्ण कार्यों के लिए वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. आशा को अवॉर्ड देकर सम्मानित करते हुए एकनाथ ताम्बवेकर,वाइस प्रेसीडेंट,नशाबंदी मंडल,महा.। साथ हैं टीवी एवं फिल्म एक्टर सिद्धार्थ जाधव तथा अन्य।

अम्बिकापुर-छ.ग.। विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए राष्ट्रपति पुरस्कृत वृक्षमित्र ओ.पी. अग्रवाल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या, राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय के डॉ. वी.के. सिंह, विद्युत विभाग के अधिक्षण अभियंता जी.एल.चंद्रा, पूर्व पार्षद करताराम, गायत्री परिवार से सुधा चौधरी तथा अन्य।

राजगढ़-ब्यावरा। विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. छोटे लाल,माउंट आबू, कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी अखिलेश श्रीवास्तव, जनपद पंचायत सी.ई.ओ. बी.पी.तिवारी, ब्र.कु. मधु तथा ब्र.कु. नम्रता।

खापरखेड़ा-कामठी(महा.)। विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता, जिला परिषद् सदस्य छाया ढोले, सरपंच वंदना ढगे तथा अन्य।

कथा सरिता

विश्वास

एक आदमी जब भी दफ्तर से वापस आता, तो कुत्ते के प्यारे से पिल्ले रोज़ उसके पास आकर उसे घेर लेते थे, क्योंकि वो रोज़ उन्हें बिस्किट देता था। कभी चार, कभी पाँच, कभी छः पिल्ले रोज़ आते और वो रोज़ उन्हें पारले बिस्किट या ब्रेड खिलाता था। एक रात जब वो दफ्तर से वापस आया तो पिल्लों ने उसे घेर लिया, लेकिन उसने देखा कि घर में बिस्किट और ब्रेड दोनों खत्म हो गए हैं। रात भी काफी हो गई थी। उस वक्त दुकान का खुला होना भी मुश्किल था। सभी पिल्ले बिस्किट का इंतज़ार करने लगे। उसने सोचा, कोई बात नहीं, कल खिला दूंगा, और ये सोचकर उसने अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लिया। पिल्ले अभी भी बाहर उसका इंतज़ार कर रहे थे। ये देखकर उसका मन विचलित हो गया। तभी उसे याद आया कि घर में मेहमान आये थे, जिनके लिए वो काजू बादाम वाले बिस्किट्स लाया था। उसने फटाफट डब्बा खोला तो उसमें सिर्फ सात-आठ बिस्किट्स थे। उसके मन में ख्याल आया कि इतने से तो कुछ नहीं होगा, एक का भी पेट नहीं भरेगा, पर सोचा कि चलो सब को एक-एक दे दूंगा, तो ये चले जायेंगे। उन बिस्किट्स को लेकर जब वो बाहर आया तो देखा कि सारे पिल्ले जा चुके थे, सिर्फ एक पिल्ला उसके इंतज़ार में अभी भी इस विश्वास के साथ बैठा था कि कुछ तो ज़रूर मिलेगा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने वो सारे बिस्किट्स उस एक पिल्ले के सामने डाल दिये। वो पिल्ला बड़ी खुशी के साथ वो सब बिस्किट्स खा गया और फिर चला गया। बाद में उस आदमी ने सोचा कि हम मनुष्यों के साथ भी तो यही होता है। जब तक ईश्वर हमें देता रहता है, तब तक हम खुश रहते हैं, उसकी भक्ति करते हैं, उसके फल का इंतज़ार करते हैं, लेकिन भगवान को ज़रा सी देर हुई नहीं कि हम उसकी भक्ति पर संदेह करने लगते हैं। दूसरी तरफ जो उस पर विश्वास बनाये रखता है, उसे उसके विश्वास से ज़्यादा मिलता है। दोस्तों, इसलिए अपने प्रभु पर विश्वास बनाये रख अपने विश्वास को किसी भी परिस्थिति में डिगने न दें। अगर देर हो रही है तो इसका मतलब है कि प्रभु आपके लिए कुछ अच्छा करने में लगे हुए हैं।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:22 PM Page 10

गरिमावान दादी

अस्तित्व की गाथायें हमने सबकी सुनी, उसपर कुछ तानें भी बुने, लेकिन एक अस्तित्व हमारे संसार में है जिसको सिर्फ और सिर्फ गुणगान के द्वारा जाना जाता है, उसपर ताना नहीं कसा गया। लोगों ने सिर्फ और सिर्फ उसको सराहा, संजोया और दिल में जगह दी। ऐसी गरिमावान दादी को शत् शत् नमन्।

एक बार की घटना है कि एक जिज्ञासु परमात्मा के घर में आता और आकर कहता कि इतना कुछ जो चल रहा है इसकी संरक्षिका कौन है? मैं उनसे मिलने को आतुर हूँ। इस आतुरता और उहापोह की स्थिति में वो सबसे पूछते-पूछते जब उस महान व्यक्तित्व के सामने पहुंचता है तो कहता कि अब मैं मान सकता हूँ कि ब्रह्माकुमारीज़ में हर एक बच्चा इतना अच्छा कैसे है! अभी मुझे लग रहा है कि ये संस्था निश्चित रूप से शिखर पर पहुंचेगी क्योंकि इसको चलाने वाला भी प्रकाश स्तम्भ के समान है। ऐसे वो जिज्ञासु दादी जी की तारीफ करते-करते थक नहीं रहा था। बड़े प्रेरणादायी बोल थे वो दादी जी के, जिनको सुनकर बहुत सारे ज्ञान को समझ करके चलना, परमात्मा यह ज्ञान सुना रहा है, परमात्मा ही हमको प्रेरणा दे रहा है,

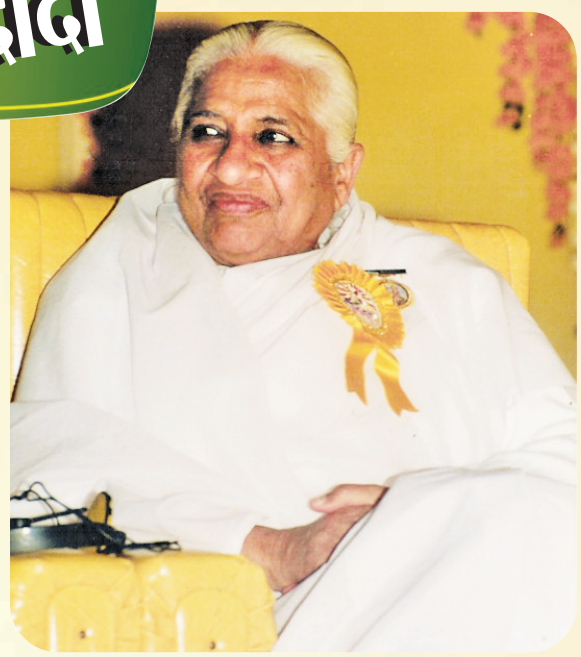

लोगों ने अपना जीवन ईश्वरीय कार्य अर्थ दिया। हमारा बहुत सुंदर सौभाग्य है कि थोड़ा बहुत दादी जी द्वारा सुनाई गई मुरली और उनके प्रेरणादायी बोल हमारे कानों में पड़े। उनसे शुरु से लेकर अभी तक हमने प्रेरणा ही ली है। दादी जी कुमारों के प्रति हमेशा अलग तरह से प्रेरणायें देते थे। वो कहते थे कि ब्राह्मण बनना, परमात्मा को अपना जीवन देना, यह एक महान कर्म है, और अपने अस्तित्व को एक नई ऊँचाई देने का एक साधन है। इसलिए आपने अगर दुनियावी जीवन से निकलकर इस जीवन को अपनाया है तो निश्चित रूप से आप परमात्मा के दिलतख्त पर हैं। इस ज्ञान में सिर्फ परमात्मा ही यज्ञ चला रहा है, परमात्मा का ही ये भंडारा है, स्वयं को ऐसा निमित्त मानना, ऐसा ट्रस्टी मानना अपने आप को बंधनों से मुक्त करना है। कहते हैं कई बार कुमार इस ईश्वरीय जीवन से ऊब जाते हैं, इसका कारण है उन्होंने अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित नहीं किया, अपने आप को ट्रस्टी नहीं माना। तभी वो जाके बाहरी दुनिया का जीवन फिर से जीने लग जाते हैं। ऐसी वास्तविकता से परिचित कराने वाली दादी जी हर समय हम सबके ज़हन में ही हैं। हमारे यज्ञ के बड़े राजयोगी भाई और बहनें जब उनके बारे में कुछ बात करते हैं तो उससे भी कुछ सीखने को मिलता है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

उनकी निरहंकारिता के चर्चे हर कोई करता। यज्ञ का विस्तार दादी का बेहद का संकल्प था। और उसको मूर्तरूप देने का कार्य भी दादी ने ही किया। हम सभी के छोटे लेकिन अविस्मरणीय अनुभव दादी जी के साथ जुड़े हैं। हम जब भी कभी पुस्तकों में ऐसा कुछ पढ़ते या सुनते हैं, तो लगता है कि एक जीवंत फरिश्ते का सटीक उदाहरण हमारी दादी जी थीं। सम्मान देने के लिए तो बहुत कुछ है, कहने के लिए भी बहुत कुछ है, लेकिन धारणा मूर्त बनने के लिए दादी जी जैसा दृढ़ संकल्प चाहिए। ये बात हम सिर्फ अपने लिए कह रहे हैं। कोई उपदेशक के रूप में ये बात नहीं कही जा रही है। वो शक्तियां अर्जित करने में इतने सालों का अभ्यास दादी जी का था कि वो कुछ नहीं... बहुत कुछ कर गये इस यज्ञ के लिए। तो ऐसे यज्ञ स्नेही, यज्ञ रक्षक दादी को हम कुमारों की ओर से साधुवाद एवं शत् शत् नमन्। हम सभी भी उनकी तरह यज्ञ की सम्भाल करने का संकल्प लेते हैं।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

प्रश्न : पति नहीं है, बेटी दो है और बेटी को नौकरी नहीं लग रही, क्या करें?
उत्तर : जो भगवान है, उसे अपना प्रियतम स्वीकार कर लें। और अपनी बेटी की बागडोर उसके हाथ में दे दें। थोड़ा आध्यात्मिक अभ्यास करें, फटाफट नौकरी अच्छी मिल जायेगी।

प्रश्न : राम का जन्म कब हुआ, सतयुग में या त्रेता में? यदि धोबी के कहने पर सीता को वन भेजा गया तो क्या उस समय भी स्त्रियों पर अत्याचार होते थे?
उत्तर : देखिये, ये शास्त्रों की कुछ कहावते हैं। वाल्मीकि जी ने कुछेक सुन्दर कथानक लिखा था, बाद में लोगों ने उसे मनोरंजक बनाने के लिए उसमें बहुत कुछ जोड़ा है। इसीलिए श्रीराम तो त्रेता में ही थे और सीता के साथ तो ये घटनायें हुई ही नहीं क्योंकि सीता तो देवी थी, लक्ष्मी स्वरूपा थी, उसके साथ तो ऐसा हो ही नहीं सकता था। उन्होंने थोड़े ही कुछ पाप किये थे जो उनके साथ ऐसा होता। ये सब गलत बातें रामायण में जोड़ दी गई हैं।

प्रश्न : मैं मैकेनिकल इंजीनियर हूँ। मेरी नौकरी 3-4 मास रहती है और फिर से छूट जाती है। कई बार ऐसा हो चुका है। कृपया बतायें क्या करूँ ?
उत्तर : आपके जीवन में एक विघ्न है। आपको 21 दिन तक विघ्न विनाशक योग भट्ठी कर लेनी चाहिए। दो संकल्प करके... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और मैं विघ्न विनाशक हूँ। एक घंटा बहुत अच्छा योग करेंगे। और संकल्प करें कि ये विघ्न हमेशा के लिए समाप्त हो रहे हैं।

प्रश्न : मेरा नाम वीणा है। मुझे डर बहुत लगता है। तो मेरा डर कैसे दूर हो, बताइये।
उत्तर : रोज़ सवेरे उठकर आपको सात बार संकल्प करना है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मैं निर्भय हूँ। बहुत सच्चे मन से ये अनुभव करें। और साथ-साथ मैं आत्मा हूँ और अजर अमर अविनाशी हूँ। मेरी मृत्यु होती नहीं। ये दो अभ्यास करने से बहुत जल्दी इससे मुक्त हो जायेंगे।

प्रश्न : मेरा नाम विशाल है। मुझे रात को बुरे स्वप्न बहुत आते हैं और जब योग में बैठते हैं तो नींद आती है। कृपया बताइये क्या करें?
उत्तर : आपकी नींद कम्प्लीट नहीं होती। जो स्वप्न भरी नींद होती है वो कम्प्लीट नींद नहीं होती। तो इसीलिए जब योग में बैठेंगे, चित्त शांत होगा तो सो जायेंगे। इसीलिए सोने से पहले अपने सबकॉन्शियस माइंड को ये संकल्प देना है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, इस देह का मालिक हूँ, और आज मुझे बहुत गहरी और स्वप्न रहित नींद आयेगी, ये पाँच बार संकल्प करें। दो चार दिन में ही सब ठीक हो जायेगा।

प्रश्न : मेरा नाम सीमा है। मेरी एक बच्ची है, वो छठी क्लास में पढ़ती है। उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता और रात में बिस्तर भी गीला कर देती है।
उत्तर : आपको दो काम करने हैं, जब वो नींद से जगे तो उससे तीन बार बुलवायेंगे कि मैं बुद्धिमान हूँ, मेरी मेमोरी बहुत सुन्दर है, और ये ब्रेन जो उसके सिस्टम को कन्ट्रोल नहीं कर पा रहा है तो दस मिनट रोज़ उसके ब्रेन को एनर्जी दें। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... ऐसे हाथों को आपस में घर्षण कर उसके सर पर हाथ रख दें एक मिनट तक। ऐसा दस बार करेंगे तो उसका यूरिन कन्ट्रोल होने लगेगा।

प्रश्न : मेडिटेशन करके क्या हम एक गाँव से दूसरे गाँव में या एक शहर से दूसरे शहर में अपने अच्छे वायब्रेशन्स या अच्छे संकल्प पहुंचा सकते हैं?
उत्तर : बिल्कुल। एक गाँव से दूसरे गाँव में ही नहीं बल्कि एक गाँव से पूरे विश्व में फैला सकते हैं।

प्रश्न : दस बारह साल से मुझे ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ज्ञान मिला है, परन्तु मेरा पैसा कहीं फँसा हुआ है और आर्थिक स्थिति थोड़ी नाज़ुक चल रही है, क्या करूं?
उत्तर : रोज़ सवेरे उठकर इस तरह संकल्प करेंगे कि मैं बहुत भाग्यवान हूँ। हे प्रभु! तूने मुझे सबकुछ दिया है। बारम्बार सुख दिया। मैं बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत धनवान हूँ, मैं कर्ज़ से मुक्त हूँ, पाँच बार ये संकल्प करेंगे, धनवान बनते जायेंगे। भाग्य का सितारा चमकता जायेगा और साथ में एक घंटा योग भी करें। पैसा भी वापिस आ जायेगा।

प्रश्न : दो मास से मैं टीवी पर देखकर राजयोग सीख रहा हूँ। बहुत फायदा हुआ है मुझे और मैं 90 प्रतिशत क्रोधमुक्त हो चुका हूँ। मुझे और भी ज़्यादा सीखना है, कृपया बतायें क्या करूं?
उत्तर : बहुत अच्छा... जो इस आधार पर आप 90 प्रतिशत क्रोधमुक्त हो गये। आप बहुत पावरफुल हैं। मैं आपको बधाई देता हूँ। आप योग अभ्यास को जारी रखें और सवेरे के समय को विशेष रूप से सुन्दर संकल्पों में व्यतीत करें तो दिनोदिन आध्यात्मिक और सांसारिक उन्नति भी होती रहेगी।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

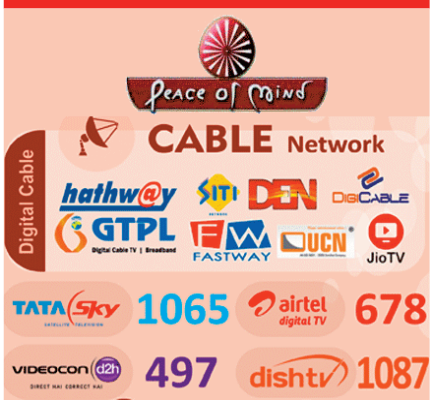

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:22 PM Page 11

शाश्वत यौगिक खेती से बढ़ायें उपज और आमदनी

ऑर्गेनिक खेती करने से हमारे ज़मीन की उत्पादकता बढ़ती है और ज़मीन की सेहत भी सुधरती है। किंतु ऑर्गेनिक के साथ यौगिक खेती में ज़मीन की सेहत के साथ साथ मनुष्य की और उसके मन की भी सेहत सुधरती है। क्योंकि इस खेती का हमारे मन के साथ सीधा कनेक्शन होता है। इस खेती में उपज को सकारात्मक प्रकम्पन दिये जाते हैं जिससे फ़सल की गुणवत्ता उच्च कोटि की बनती है। हमारी भावनायें जियो और जीने दो की प्रखर बनती है। जिससे जो भी इसको ग्रहण करता है उन्हें भी सुख और शांति की अनुभूति होती है। मैं वर्षों से ये खेती कर रहा हूँ। ना ही मुझे बेचने की फिक्र रहती और ना ही आमदनी की। अपने आप ही लोग अपनी सेहत को सुधारने के लिए हमसे सम्पर्क करते हैं।

- गतांक से आगे...

महाराष्ट्र शासन कृषि विभाग के 'आत्मा' के अंतर्गत सरकार की योजनाओं का लाभ लेने और ज़मीन का परिमाणिकरण करने के लिए हमने कृषि परम्परागत योजना के अंतर्गत 35 किसानों का

संगठन बनाया और 50 एकड़ ज़मीन ली। हमने जो संगठन बनाया उसका नाम हमने रखा 'ओम शांति ऑर्गेनिक फार्मर मालेगांव'।

किसान और ग्राहक के बीच बिचौलिए हुए लुप्त

ऑर्गेनिक खेती में जो पैदावार होती है जैसे - सब्जियां, गेहूं, हल्दी, चना, दालें, फल, उनके लिए हमने शहर में अलग से सप्ताह में एक दिन में 2-3 घंटे के लिए, मार्केटिंग करने के लिए एक मंडी बनाई। उसमें सभी किसान यौगिक ऑर्गेनिक माल लेकर आते हैं। और स्वास्थ्य के प्रति शहर के जो जागरुक नागरिक हैं वो वहाँ से माल खरीदते हैं। एक साल के लिए माल की कीमत फिक्स होती है, वो ना कम होती है और ना ज़्यादा। किसान एक साल के लिए कीमत को लेकर निश्चिंत रहते हैं। नागरिकों को विषमुक्त और पौष्टिक अनाज मिलता है और किसानों को अच्छा दाम मिलता है। बीच में कोई बिचौलिया नहीं है, इसलिए दोनों खुश हैं।

ऑर्गेनिक फार्म में फसल का निरीक्षण करने के पश्चात् चित्र में सरकारी अधिकारी।

शाश्वत यौगिक खेती में सरकार की मदद

सरकार एक एकड़ ज़मीन पर ऑर्गेनिक खेती करने के लिए दस हज़ार रुपये की आर्थिक सहायता करती है और ज़मीन का परिमाणिकरण करती है। जिससे किसानों को मदद मिलती है। सरकार किसानों को आधुनिक तकनीकी के बारे में जानकारी भी देती है।

शाश्वत यौगिक खेती में वेस्ट को बनाया बेस्ट

शाश्वत यौगिक खेती के अनुसार दो एकड़ ज़मीन में गन्ने की खेती होने के पश्चात् गन्ने का जो वेस्ट मटिरियल होता है वो हमने जलाया नहीं, उसको ज़मीन में गाड़ दिया। फिर उसके पश्चात् हमने ज़मीन में हल चलाकर ज़मीन को दूसरी फसल के लिए तैयार किया।

योग से बीजों का किया संस्करण

दूसरी फसल हमने हल्दी की उगाने के लिए 2-4 दिन खेत में ही बैठकर योग के वायब्रेशन्स द्वारा हल्दी के बीजों का संस्करण किया। फिर बाबा की याद में ही बीजारोपण किया। फिर हमने खेतों में चारों दिशाओं में शिव बाबा के झण्डे लगाये। झण्डे लगाने का कारण ये है कि एक तो झण्डा देखकर नकारात्मक विचार बदल जाते हैं, अच्छी भावना रहती है। दूसरा झण्डे में लाल और पीले रंग से फसल की ग्रोथ पावर बढ़ती है और कीट नियंत्रण भी होता है। हवा के झोंके से झण्डा लहराते समय सूर्य की किरणें लाल रंग पर आकर प्रतिबिंबित होकर फसल तक पहुँचने से फसल शक्तिशाली बनती है और फसल की अच्छी वृद्धि होती है। हम रोज़ अमृतवेले प्रकृति और खेतों को साकाश देते हैं। दिनभर बाबा के योग के गीत भी हम बजाते हैं। और जो मजदूर काम पर आते हैं उनको भी हम मेडिटेशन सिखाते हैं और फिर दिन में तीन बार मेडिटेशन करवाते भी हैं। इससे हमारे खेतों में आने वाले मजदूरों के व्यसन भी छूट गये। उनके जीवन में सात्विकता आ गई। जो फिर खेती में सहायक होती है।

खेत में ही बनायी खाद

खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए जो खाद का इस्तेमाल हम करते हैं वो हम खुद घर पर ही बनाते हैं। जैसे केंचुए की खाद, हरी खाद, सेंद्रिय खाद, कम्पोस्ट खाद, नीम पेंड इत्यादि का इस्तेमाल करते हैं। और हर 15 दिन बाद जीवामृत देते हैं और दशपर्णी अर्क, छाछ और निम्बोली अर्क का स्प्रे करते हैं।

खेती की अच्छी पैदावार के लिए हम जैविक संवर्धक भी देते हैं। जैसे नत्र(नाइट्रोजन), स्थिर करने वाले जीवाणु, स्फुरद की उपलब्धता कराने वाले जीवाणु, सेंद्रिय पदार्थों का विघटन कराने वाले जीवाणु, फफूंदीरोधक जीवाणु इत्यादि। फसल को जिस समय जिन जीवाणुओं की आवश्यकता होती है, वे जीवाणु ज़मीन में मिला देते हैं।

जैसा हम प्रकृति को देंगे, वैसा ही प्रकृति हमें लौटाएगी

ये सब देखकर अन्य किसान मुझसे पूछने लगे कि तुमने इसमें क्या डाला है? कौन सी खाद डाली है? इतना उत्पादन कैसे बढ़ा? इतनी कीमत कैसे मिली? तब मैंने बताया कि हमने इसमें कोई भी रासायनिक खाद नहीं डाली थी और परमात्मा शिव को याद कर प्रकृति को शुद्ध वायब्रेशन्स पहुंचाते हुए खेती की कि जैसे - मैं शांत हूँ, मैं पवित्र हूँ, मैं शक्तिशाली हूँ, इस तरह से स्वमान लेकर प्रकृति को वायब्रेशन्स दिये। क्योंकि जैसा हम संकल्प करेंगे वैसा ही प्रकृति को मिलेगा और वैसा ही प्रकृति हमें वापिस करेगी। हम उसकी मदद करते हैं तो प्रकृति भी हमारी मदद करने में लग जाती है। राजयोग के अभ्यास से जो भी आध्यात्मिक शक्तियाँ मिलती हैं वे सभी समस्याओं के लिए समाधान स्वरूप में एक दवाई का काम करती है।

इस विधि के प्रयोग से उपज व गुणवत्ता में बढ़ोतरी

हल्दी की खेती में इस विधि के प्रयोग से उत्पादन बढ़ गया। दो एकड़ ज़मीन में 50 क्विंटल हल्दी निकली। यह देख हमें बहुत खुशी हुई। हल्दी की गाँठ को उबालने के बाद भी गाँठ बड़ी-बड़ी ही रही और सुखाने के बाद भी उसकी साइज़ में कोई फर्क नहीं पड़ा, बड़ी ही रही, हल्दी की गाँठ के अन्दर के रंग में तेल जैसी तेज चमक और नर्म रही। उसकी गुणवत्ता अच्छी ही रही।

परमात्मा से मेडिटेशन द्वारा बढ़ी आमदनी

उपज होने के बाद मेरे भाई ने हल्दी मार्केट में ले जाकर उसका 1 क्विंटल का 6000रुपये के हिसाब से सौदा किया। लेकिन मेरा मन नहीं माना और मैंने थोड़ा रुकने को कहा। फिर मैं मेडिटेशन कक्ष में जाकर बाबा(परमात्मा) की याद में बैठ गया और उनसे पूछा कि मैं क्या करूँ? तो बाबा ने मुझे तुरंत टचिंग कराई कि आपको ये सौदा नहीं करना है। फिर उसके 2-4 दिन

बाद ही हम दुबारा हल्दी को मार्केट लेकर गये और वहाँ हमने बोली लगाकर उसको बेचा जिसकी हमें 6000 रुपये प्रति क्विंटल की बजाय 9000 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से कीमत मिली। इससे मुझे अनुभव हुआ कि जब हम स्व हित के साथ साथ दूसरे के हित को ध्यान में रखते हुए कार्य करते हैं तो आमदनी में भी वृद्धि स्वतः होती है। फिर हमने बाबा को शुक्रिया किया।

जिस किसी को भी यौगिक खेती से निकला हुआ जैसे गेहूं, हल्दी, सभी प्रकार की दालें, सोयाबीन और ज्वार चाहिए तो इस नम्बर पर सम्पर्क करें - 9421295984 , 7387291054

ओम शांति ऑर्गेनिक फार्मर - मालेगांव
कृषि तंत्रज्ञान व्यवस्थापन यंत्रणा (आत्मा), नांदेड़
FARM REG. NO. - AR/ATMA /OF 20H/2019
संगठन - सेंद्रिय खेती

गोवा-मापुसा। उकास्सिम गांव में ब्रह्माकुमारीज़ कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के 'ट्रेनिंग सेंटर' के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित हैं संजीव मायकर,डिप्टी डायरेक्टर,डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर,गोवा सरकार, रेशमा केरकर,साइंटिफिक एंड एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर,गोवा स्टेट बायोडायवर्सिटी बोर्ड, राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. सुरेखा, दर्शना बहन तथा अन्य।

झाबुआ-म.प्र.। विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रतिज्ञा करते हुए पतंजलि योग समिति अध्यक्ष रुक्मणि वर्मा, शिक्षाविद व साहित्यकार के.के. त्रिवेदी, समाजसेवी यशवंत भंडारी, योग प्रशिक्षक जितेन्द्र, भारतीय स्त्री शक्ति संगठन प्रदेशाध्यक्षा किरण शर्मा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जयंती व अन्य।

OM - 9 - 2019 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 09/07/2019 12:22 PM Page 12

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर

लाल किले से दिया शांति का संदेश

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर लाल किले में ब्रह्माकुमारीज़ व आयुष मंत्रालय,भारत सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान विश्व में शांति के प्रकम्पन फैलाते हुए हज़ारों राजयोगी भाई-बहनें। मंचासीन उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू तथा विभिन्न धर्मों के अग्रणी जन।

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विश्व को शांति एवं एकता के सूत्र में बांधने के उद्देश्य से ब्रह्माकुमारी संस्थान एवं आयुष मंत्रालय ने लाल किले पर एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 40 हज़ार से अधिक राजयोगी भाई-बहनों की सहभागिता रही।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य वक्ता राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने गीता में वर्णित योग का सार समझाते हुए कहा कि परमात्मा नई दुनिया के निर्माण के लिए राजयोग का ज्ञान दे रहे हैं, जिससे हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव आता है।

हैदराबाद के मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय के कुलपति फिरोज़ बख्त अहमद ने कहा कि जहाँ विज्ञान समाप्त हो जाता है वहाँ पर योग काम करता है। उन्होंने ओम शब्द की महत्वता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह एक शब्द प्रदर्शित करता है कि ईश्वर एक ही है, वह किसी धर्म के लिए अलग नहीं है। योग के बल पर धर्म और मज़हब के मकड़जाल से छूट समाज एकजुट हो सकता है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहाँ अल्लाह का सत्य परिचय पाकर उनका जीवन ही बदल गया।

भारत स्थित बहाई सम्प्रदाय एवं लोटस टेम्पल के राष्ट्रीय न्यासी डॉ. ए.के. मर्चेंट ने इस अवसर पर प्रभु से एकता का वर मांगा। दिल्ली यहूदी सम्प्रदाय सिनागोग के मुख्य पुजारी व सचिव राबी आइजैक ने सभी से राजयोग को जीवनशैली में शामिल करने का अनुरोध किया। कार्यक्रम में योग के विभिन्न आसन भी लोगों को सिखाए गए। पंडित शिवा नंद मिश्रा ने मंत्रोच्चारण किये। इससे पूर्व ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने उपराष्ट्रपति का स्वागत करते हुए उनको तुलसी का पौधा भेंट किया। ब्र.कु. आशा ने योग को बढ़ावा देने के सरकार के प्रयास की प्रशंसा की। साथ ही योग की महत्ता पर भी प्रकाश डाला।

योग से जीवन में शांति और ऊर्जा बढ़ती

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उप राष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने न केवल योग विषय पर चर्चा की बल्कि योग एवं व्यायाम करके उपस्थित लोगों का उत्साह भी बढ़ाया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के योग को बढ़ावा देने के प्रयास की प्रशंसा की। साथ ही युवाओं से योग को उनकी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने की अपील की। उन्होंने कहा कि योग से मानव व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे जीवन में शांति आती है और ऊर्जा बढ़ती है।

- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम में 40 हज़ार से अधिक लोग हुए शामिल
- ब्रह्माकुमारीज़ एवं आयुष मंत्रालय ने किया आयोजन
- सभी धर्मों के नेताओं ने लिया भाग

मीडिया जगत जागृति अभियान | **ओमशांति मीडिया पाक्षिक पत्रिका की 21वीं वर्षगांठ पर मीडिया महासम्मेलन की श्रृंखला का भव्य शुभारंभ**

सकारात्मक खबरों से दे सकते हैं समाज को नई दिशा : प्रो. दीक्षित

दीप प्रज्वलित करते हुए दायें से किशन मुदगल,महासचिव,कांग्रेस कमेटी,म.प्र., विनय अग्रवाल,वरिष्ठ पत्रकार,अमर उजाला, प्रो. कमल दीक्षित,पूर्व विभागाध्यक्ष,माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, ब्र.कु. आदर्श,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. गंगाधर,सम्पादक ओमशान्ति मीडिया, ब्र.कु. अनुज,पूर्व सम्पादक,स्पेक्ट्रम बुक, जी.एस. मौर्य,अपर संचालक,जनसंपर्क,ग्वालियर, अजय मिश्रा,ब्यूरो चीफ,यू.एन.आई, राजेन्द्र श्रीवास्तव,ब्यूरो प्रमुख,देशबंधु, केशव पांडे,वरिष्ठ पत्रकार,प्रमुख सांध्य।

ग्वालियर। परमात्म शक्ति द्वारा स्वर्णिम भारत की स्थापना के अंतर्गत ओमशान्ति मीडिया पाक्षिक पत्रिका के सफलतम 21वें वर्षगांठ पर आयोजित मीडिया महासम्मेलन में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि आज़ादी के समय महात्मा गांधी सहित अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने अखबारों को खबरों के माध्यम से आंदोलन का स्वरूप दिया, जिससे आज़ादी की लड़ाई में जन जागरण के व्यापक स्वरूप से लोगों में एक सकारात्मक भाव जागा और देश आज़ाद हुआ। लेकिन आज शायद ही ऐसा कोई अखबार, कोई इलेक्ट्रॉनिक चैनल हो जिसमें नकारात्मक खबरें न हों। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के कुछ अखबारों ने बड़ा ही अच्छा प्रयोग किया है जिसमें उन्होंने प्रथम पेज पर नकारात्मक खबरों को स्थान नहीं दिया है। इस प्रयोग से समाज में नई दिशा देखने को मिल रही है। स्पेक्ट्रम बुक्स और साधना पथ मैगज़ीन के पूर्व सह सम्पादक ब्र.कु. अनुज,दिल्ली ने कहा कि पत्रकारिता बहुत ही जटिल कार्य है। लेकिन पत्रकारिता में यदि अध्यात्म आ जाये तो इसकी राह बड़ी ही सहज हो जाती है। उन्होंने कहा कि जब तक हम सकारात्मक सोच से पत्रकारिता नहीं करेंगे तब तक समाज को एक नई दिशा नहीं मिलेगी। इस दौरान ब्र.कु. अनुज ने मोटिवेशन टॉक शो के माध्यम से पत्रकारों को अध्यात्म द्वारा सच्ची पत्रकारिता करने की टिप्स दी। जनसंपर्क अपर संचालक जी.एस. मौर्य ने कहा कि इस आपाधापी के दौर में लोगों को नकारात्मक खबरें पढ़ने को मिल रही हैं जो कि सभी के लिए नुकसानकारक साबित हो रही हैं। पत्रकारों को इससे बचना चाहिए। उन्होंने ओमशान्ति मीडिया पाक्षिक पत्रिका के 21 वर्ष पूर्ण होने पर मीडिया महासम्मेलन के आयोजन पर ब्रह्माकुमारीज़ को साधुवाद दिया।

जी न्यूज़ चैनल, आर.वी.एस. चैनल, सुदर्शन चैनल, न्यूज़ वर्ल्ड आदि चैनलों में इंटरव्यू देते हुए ब्र.कु. गंगाधर। साथ हैं ब्र.कु. अनुज।

महासम्मेलन अध्यक्ष ब्र.कु. गंगाधर, सम्पादक,ओमशान्ति मीडिया, माउण्ट आबू ने कहा कि 21 वर्ष पूर्व मात्र दो हज़ार कॉपियों से ओमशान्ति मीडिया पत्रिका की हमने शुरुआत की थी, लेकिन मुझे बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि आज इसकी लगभग डेढ़ लाख कॉपियां प्रिन्ट हो रही हैं। पाठकों को इसके अगले अंक का बेसबरी से इंतज़ार रहता है। उन्होंने बताया कि इस पत्रिका में किसी भी प्रकार का विज्ञापन स्वीकार नहीं किया जाता। 21 वर्षों में सिर्फ और सिर्फ सकारात्मक खबरों के ही दम पर इस अखबार ने इतनी बड़ी उपलब्धि प्राप्त की। उन्होंने कहा कि परमात्म शक्ति द्वारा स्वर्णिम भारत की स्थापना की जा रही है, इसमें मीडिया सकारात्मकता को बढ़ावा देकर अपनी अहम एवं सशक्त भूमिका अदा कर सकता है।

सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श ने सभी मीडियाकर्मियों को राजयोग के ज़रिये आध्यात्मिकता से जुड़ने की बात कही व उन्होंने सभी को राजयोग का अभ्यास भी कराया।

सम्मेलन का संचालन करते हुए ब्र.कु. प्रहलाद ने कहा कि जब तक आप सभी मीडियाकर्मी अध्यात्म और योग से नहीं जुड़ेंगे तब तक शांति का अनुभव करना सहज नहीं।

पूर्व में कुमारी सृष्टि, कुमारी मुनमुन ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। महासम्मेलन में कांग्रेस नेता किशन मुद्गल, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. आशा सहित बड़ी संख्या में मीडिया से जुड़े गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ब्र.कु. गंगाधर को शॉल ओढ़ाकर एवं मोमेन्टो भेंट कर सम्मानित करते हुए रविशेखर,सम्पादक,अजय भारत। साथ में ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. अनुज तथा अन्य।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 12th July 2019
मुख्य संपादक : ब्र.कु. गंगाधर, प्रकाशकः ब्र.कु. करुणा तथा डी.बी. प्रिंट कॉर्प. जयपुर से मुद्रित एवं ब्रह्माकुमारीज़ के लिए छपवाया।